ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

श्रावण २०८३ अगस्त २०२६

₹ ३०

कविता– खेल दिवस–२९ अगस्त

रखना है यह ध्यान में

– मृगेन्द्र श्रीवास्तव

खेल खेलते हैं हम बच्चो, कुछ घर, कुछ मैदान में।
अनुशासित रहना है हरदम, रखना है यह ध्यान में।।

हॉकी, क्रिकेट, बेसबॉल, कुछ हैं मैदानी खेल।
मैदानी हों या हों घर के, खेल कराते मेल।
टीम भावना का करते, संचार सदा इंसान में।
अनुशासित रहना है हरदम, रखना है यह ध्यान में।।

लूडो, शतरंज, कैरम आदि, घर में खेले जाते हैं।
बुद्धि बढ़ाते, मन हर्षाते, दांव–पेंच सिखलाते हैं।
ज्ञान कराते, मान कराते, वृद्धि करें ये शान में।
अनुशासित रहना है हरदम, रखना है यह ध्यान में।।

लुकाछिपी व चोर–सिपाही,
अंत्याक्षरी निराली है
खेल विधायें, सजग बनायें,
आनंद देने वाली हैं।
शक्ति और स्फूर्ति भरें ये,
तन, मन में व प्राण में।
अनुशासित रहना है हरदम,
रखना है यह ध्यान में।।

खेल खेलते हैं हम बच्चो, कुछ घर, कुछ मैदान में।
अनुशासित रहना है हरदम, रखना है यह ध्यान में।।

– सिंहपुर (म. प्र.)

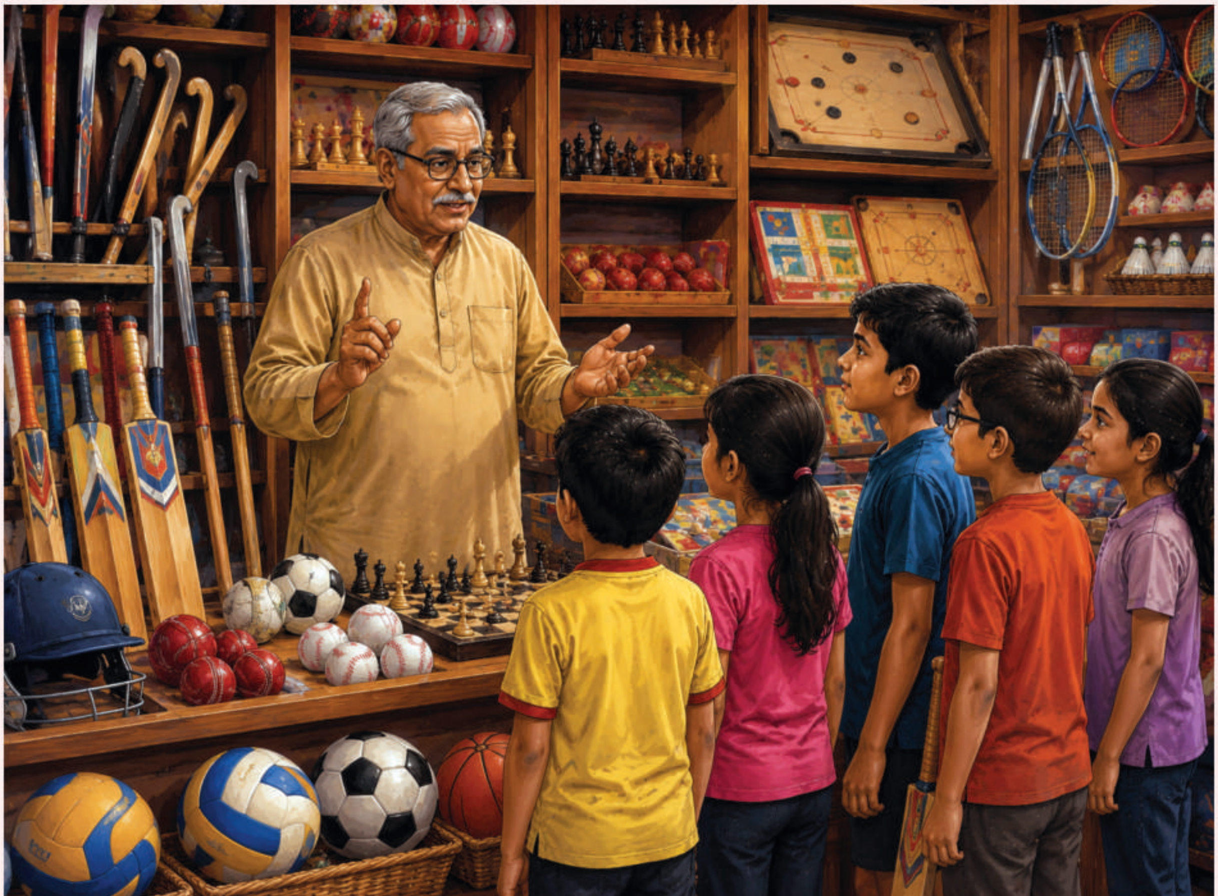

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

श्रावण	२०८३	वर्ष	४७
अगस्त	२०२६	अंक	०२

संपादक
गोपाल माहेश्वरी

प्रबंध संपादक
नारायण चौहान

मूल्य

एक अंक :	३० रुपये
वार्षिक :	३०० रुपये
दस वर्षीय :	५००० रुपये
सामूहिक वार्षिक :	१८० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

स्वामी सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर, म. प्र. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश भावसार द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स, २०-२१, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इन्दौर, म. प्र. से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, नवलखा, इन्दौर, म. प्र. से प्रकाशित।

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

आज अपनी बात एक पहेली से आरंभ करते हैं

तरु की चोंटी पर रहे किन्तु नहीं खगराज।
तीन नयन इसके मगर नहीं है शिव नटराज।
छाल लपेटे वस्त्र सी किन्तु न योगीराज।
घड़ा न बादल, जल भरा बूझ पहेली आज।।

यह एक प्रसिद्ध संस्कृत प्रहेलिका का हिन्दी अनुवाद है। थोड़ा मस्तिष्क का व्यायाम करेंगे तो समझ जाएँगे। ये सम्मान, पूजा, शगुन, अनुष्ठान आदि अवसरों प्रमुख रूप से उपयोग आने वाला फल नारियल है। शास्त्र इसकी तुलना सज्जनों से करते हैं-

नारिकेल समाकारा: दृश्यन्ते खलु सज्जना:।
अन्ये च बदरिकाकारा: बहिरेव मनोहरा:।।

सज्जन लोग नारियल जैसे बाहर से कठोर होकर भी अन्दर से मधुर और कोमल होते हैं लेकिन जो सज्जन नहीं है वे बेर के फल जैसे बाहर से तो सुन्दर दिख सकते हैं लेकिन अन्दर से कठोर गुठली व खट्टे गूदे वाले ही होते हैं।

बच्चो! आप जानते हैं नारियल प्राय: समुद्री क्षेत्रों में अधिक होता है। यह एक विशेष जीवन संदेश भी देता है। समुद्र के किनारे खारे जल से सिंचित, रेतीली भूमि में सीधे, बिना अधिक स्थान घेरे बढ़ने वाला नारियल सबके लिए अपने में पौष्टिक गिरी और मधुर जल संजोकर रखता है। संसार के सारे अनुभवों के बाद भी जिसकी मधुरता नष्ट न हो उस फल को निश्चय ही 'श्री' लगाकर सम्मानित होने का अधिकार है। वह श्रीफल है। बहुत ऊँचे लगता है लेकिन देवता के, चरणों के चढ़ता है, श्रेष्ठजनों के हाथों में समर्पित होता है। अपना बलिदान देकर भी सबमें अपनी आन्तरिक मधुरता प्रसाद बनकर बँटने में सार्थकता अनुभव करता है। अद्‌भुत प्रतीक है नारियल परोपकार का, संस्कार का, समर्पण का। श्रावणी पूर्णिमा रक्षा बंधन के लिए ही नहीं संस्कृत दिवस और नारियली पूर्णिमा के रूप में भी मनाई जाती है। महाराष्ट्र के सागरतटीय क्षेत्रों में यह विशेष पर्व है। इसलिए नारियल की कुछ विशेषताएँ आपको ध्यान में लाने का प्रयत्न किया है। कठोरता में छुपी मधुरता खोज लेने से जीवन मंगलमय बन जाता है।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी

- पुरस्कार सच बोलने का -डॉ. रामसिंह यादव १८
- मेरी खेल किट -पूनम पाण्डे ३०
- लोमड़ का प्रायश्चित -डॉ. के. रानी ३९

छोटी कहानी

- अनमोल उपहार -पवित्रा अग्रवाल ०५

प्रेरक प्रसंग

- स्वाभिमान -पुष्पेश कुमार 'पुष्प' ४८

लघुकथा

- पुरस्कार -मीरा जैन ४१

बाल लेखनी

- जुगनू की चमक - पावनी पाण्डे ४४

चित्रकथा

- गिठान -संकेत गोस्वामी २३
- लाल बुझक्कड़ काका... -देवांशु वत्स ४५

आलेख

- तो न होता पाकिस्तान.. - डॉ. उमेश प्रताप वत्स २४

एकांकी

- देश के लिए -भगवती प्रसाद द्विवेदी ०७

यात्रा अनुभव

- कालू -करुणा प्रजापति ३३

कविता

- रखना है यह ध्यान -मृगेन्द्र श्रीवास्तव ०२
- हवा का झोंका -दीनदयाल शर्मा १०
- तुलसी की पहचान -गोपाल माहेश्वरी २२
- बादल -सुकीर्ति भटनागर ३४
- चलो चलें चंदा के घर -ओम उपाध्याय ३८
- गदहा हवलदार -उमाशंकर मनमौजी ५०
- कभी नहीं वे लड़ते -विनय बंसल ५०
- रसगुल्ले से गाने तक -रावेन्द्र कुमार 'रवि' ५१

स्तंभ

- बाल साहित्य की धरोहर -डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' १३
- छः अँगुल मुस्कान - २८
- शिशु महाभारत -मोहनलाल जोशी ३५
- बच्चे विशेष -रजनीकांत शुक्ल ३६
- पुस्तक परिचय - ४६

बौद्धिक क्रीडा

- कौनसी राखी किसकी -चाँद मोहम्मद घोसी ०६
- संस्कृत का चमत्कार - ११
- मस्तिष्क का व्यायाम -देवांशु वत्स १२
- पहेलियाँ -श्याम पलट पाण्डेय २१
- बूझो तो जानें -डॉ. राकेश चक्र २२
- दिमाग की दौड़ -देवांशु वत्स २८
- सांस्कृतिक पहेलियाँ - ४२
- भूल भुलैया -चाँद मोहम्मद घोसी ४८

एवं
संकेत गोस्वामी की जानकारी व मनोरंजन से भरी विशेष प्रस्तुतियाँ

क्यू आर कोड से भी जमा कर सकते हैं
देवपुत्र का सदस्यता शुल्क

क्यू आर कोड से शुल्क जमा करने पर स्क्रीन शॉट, अपना नाम, पूरा पता, पिनकोड सहित एवं मोबाइल नम्बर, प्रबंध संपादक श्री. नारायण चौहान के व्हाट्सएप नंबर 8103700552 पर अवश्य प्रेषित करें।

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - **''मन्दसौर संजीत मार्ग SSM''** आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

अनमोल उपहार

– पवित्रा अग्रवाल

अर्पिता अपने भाई रोहित से दो वर्ष छोटी थी। यों दोनों में नोक–झोंक चलती रहती थी पर वह रोहित की शिकायत माँ–पिताजी से कभी नहीं करती थी। रोहित भी उसे बहुत प्यार करता था।

राखी का त्यौहार आने वाला था। रोहित को आश्चर्य हो रहा था कि अर्पिता ने अभी तक कोई फरमाइश क्यों नहीं की? हर वर्ष एक महीने पहले से ही वह किसी न किसी मनपसंद उपहार की माँग रख देती थी और लेकर ही छोड़ती थी।

रक्षाबंधन के जाते ही वह भाईदूज की प्लानिंग शुरू कर देती थी। उसकी लिस्ट बनती बिगड़ती रहती थी पर इस बार तो कोई सुराग ही नहीं मिल रहा था। न कोई माँग न कोई जिज्ञासा।

रोहित ने भी कुछ नहीं पूछा वह जानता था कि वह मौका नहीं छोड़ने वाली। हो सकता है कोई बड़ा या मँहगा उपहार चाहती हो पर माँगने की हिम्मत जुटा रही हो।

वह अपने को अधिक दिन रोक नहीं पाया और एक दिन उसने पूछ ही लिया– ''अर्पि! क्या बात है, इस बार रक्षा बंधन पर तुम्हें क्या चाहिए, अभी तक तुमने कुछ बताया नहीं।''

''अरे चिन्ता मत करो भाई! मैं गिफ्ट छोड़ने वाली नहीं हूँ, मन में सोच विचार चल रहा है पर अभी निश्चित नहीं हुआ है, उस दिन तक निश्चित कर के बता दूँगी।''

''पहले से कुछ हिंट तो दे दे ताकि बचत शुरू कर दूँ।''

''कोई बात नहीं भाई! रुपये कम पड़े तो मुझ से उधार ले लेना।''

आखिर राखी का दिन भी आ गया। उसने सुंदर सी राखी रोहित की कलाई पर बाँध कर तिलक भी कर दिया, दोनों ने एक दूसरे को मिठाई भी खिला दी पर उसने कुछ नहीं माँगा।

''अर्पि! अभी तक उपहार का चुनाव नहीं हुआ?''

''कर लिया है भाई आज बता दूँगी।''

माँ कई दिन से उनकी बातें सुन रही थीं। पर उनकी समझ में भी कुछ नहीं आ रहा था कि अर्पिता अपने भाई से क्या चाहती है पर वह चुप रहीं।

जैसे ही रोहित बाइक की चाबी और बैग लेकर कॉलेज के लिए बाहर निकला अर्पिता हेलमेट लेकर सामने खड़ी हो गई और बोली– ''भाई! वचन

दो कि आज के बाद आप बिना हेलमेट के बाइक नहीं चलाओगे।''

''मेरी नटखट बहन! आज तुझे क्या हुआ है?'' तुझे ज्ञात है न हेलमेट में मुझे उलझन होती है, मैं नहीं लगा पाता।''

''पर आज से लगाना पड़ेगा भाई! यही एक वचन मेरा राखी का उपहार होगा। देना ना देना आपकी इच्छा है।''

''बहन! तू ने तो मुझे दुविधा में डाल दिया। माँ-पिताजी तो मुझे हमेशा ही टोकते रहते थे, मैं टाल जाता था पर तू ने मुझसे कभी यह आग्रह नहीं किया था। कहीं यह उनका ही सुझाव तो नहीं है?''

''नहीं यह मेरा स्वयं का सुझाव है। अब यह भी बता दूँ कि मेरे मन में यह विचार कब और कैसे आया।''

माँ भी यह जानने के लिए वहाँ आ गई थीं।

''लगभग पंद्रह-बीस दिन पहले मैं अपने मित्र के साथ ऑटो से जा रही थी तभी ऑटो वाला बोला एक्सीडेंट हुआ है! हमने देखा कि हेलमेट पहने एक आदमी सड़क पर पड़ा था और लोग वहाँ जमा होने लगे थे, ड्राइवर बोल सर के बल गिरा है, हेलमेट ने बचा लिया वरना सिर फटना तो तय था, शायद बच जाएँ।''

''तब वह जिंदा था?''

''पता नहीं हमारा ऑटो तो आगे बढ़ गया पर लोग उसकी सहायता के लिए वहाँ आ गए थे और ट्रेफिक पुलिस भी आ गई थी। तभी से मेरे दिमाग में राखी पर आपसे यह उपहार लेने का विचार आया था, देखो भाई! मना नहीं कर देना।''

रोहित कभी अर्पिता को देखता और कभी उस हेलमेट को।

''भाई! क्या सोच रहे हो? यह उपहार मुझे दे पाओगे?''

हेलमेट लेते हुए रोहित बोला- ''पूरी कोशिश करूँगा, किसी दिन लेना भूल जाऊँ तो तुम या माँ मुझे याद दिला देना।''

''ठीक है भैया, यह मेरे लिए अनमोल है।''

- बेंगलूरू (कर्नाटक)

बौद्धिक क्रीडा

कौनसी राखी किसकी

- चाँद मोहम्मद घोसी

राखी के त्योहार के दिन बहनें अपने भाई की कलाई में राखी बाँधना चाहती हैं लेकिन इनके धागे आपस में उलझे हुए हैं। धागे सुलझाकर बताइए कौनसी राखी किसकी है?

- मेड़ता सिटी (राजस्थान)

देश के लिए

– भगवती प्रसाद द्विवेदी

पात्र

ह्वेनसांग– चीनी यात्री।

सैनिक– बीस भारतीय सैनिक।

मांझी– नाव खेने वाला।

(मंच पर नदी का दृश्य। एक नाव खड़ी है। नाव पर पुस्तकों की पेटियाँ और बंडल लादे जा रहे हैं। ह्वेनसांग एक किनारे खड़े हैं।)

ह्वेनसांग– कितना सुहाना है यहाँ का दृश्य! वाह! प्रकृति की शोभा देखते ही बनती है।

पहला सैनिक– महोदय! यह ब्रह्मपुत्र नदी है। ऐतिहासिक महत्व की नदी है यह।

व्हेनसांग– तुमने ठीक कहा, सैनिक! मगर इस नदी का सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व भी है।

दूसरा सैनिक– सर! इसकी वेगवती धारा भी विलक्षण है। एक तरफ इसका कल–कल, छल–छल निनाद और दूसरी तरफ इसका कुपित रूप दोनों देखते ही बनता है।

ह्वेनसांग– केवल यह ब्रह्मपुत्र नदी ही नहीं, यहाँ की हर चीज विलक्षण है। सबसे अनूठा है महाराज हर्षवर्द्धन का राज। कितना सुख–चैन है यहाँ। तभी तो यहाँ के शासन और सुदृढ़ व्यवस्था की कीर्ति दूर–दूर तक फैली हुई है।

सभी सैनिक (नारे लगाते हुए)– महाराज हर्षवर्द्धन की.... जै! भारत देश की... जै! महाराज... अमर रहें....।

ह्वेनसांग– सैनिको! आज मैं बहुत प्रसन्न हूँ। महाराज हर्षवर्द्धन का नाम सुनकर ही मैं चीन से यहाँ आया था। भारत की शासन–व्यवस्था मुझे यहाँ खींच लाई थी। मगर भारतीय विरासत को देख मैं तो दंग रह गया। तभी तो भारतीय संस्कृति, साहित्य और दर्शन के अध्ययन में मैं बरसों लगा रहा। आज मैं धन्य हो गया। यहाँ की यह उक्ति बिलकुल सही है– जिन खोजा तिन पाइयाँ....

एक सैनिक– मान्यवर! अगर हमारा देश और हमारे महाराज महान हैं तो आप भी कम नहीं हैं। हीरे की परख तो जौहरी ही कर सकता है। सच्चे पारखी हैं आप। जैसा कुशल समीक्षक हमें और कहाँ मिलेगा, श्रीमान्!

ह्वेनसांग– मैं तो एक अदना विद्यार्थी हूँ। किन्तु मुझे इस देश से और यहाँ के साहित्य, संस्कृति, दर्शन से अमिट प्यार हो गया है। इसीलिए मैं अपने साथ इन विषयों की उत्कृष्ट पुस्तकें लिए जा रहा हूँ। दूसरे शब्दों में, इस महान देश का विशाल पुस्तकालय ही मेरे साथ जा रहा है।

सैनिक– ये पुस्तकें भारत की जान हैं, श्रीमान्! इनमें देश की आत्मा बसती है। बहुमूल्य हैं ये पुस्तकें और अमूल्य हैं आप!

दूसरा सैनिक– इसीलिए तो आपकी और इन पुस्तकों की सुरक्षा के लिए हमें तैनात किया गया है। हमारे महाराज की मंशा है। विदेशी अतिथि की जान–माल की सुरक्षा।

ह्वेनसांग– मैं अभिभूत हूँ इस अतिथि सत्कार पर। कृतज्ञ हूँ सम्राट हर्षवर्द्धन का और आभारी हूँ आप सबका।

तीसरा सैनिक– श्रीमान्! नौका तैयार है। सभी किताबों की पेटियाँ नाव में लाद दी गई हैं।

पहला सैनिक– कोई पेटी छूटी तो नहीं?

तीसरा सैनिक– नहीं! एक–एक पेटी की जाँच कर ली गई है। सारे सामान लादे जा चुके हैं।

ह्वेनसांग– तब शुभ कार्य में देरी कैसी? हम सभी नाव में सवार हो जाएँ।

सैनिक– जैसी आज्ञा, महाराज!

(सभी नाव में जा बैठते हैं।)

माँझी (नाव खेते हुए) –

उगे रे मोर सुगना माटी में सोनवा।
धरती के पूतवा खोदे कियरिया
चारू ओर लहरेले खूब हरियरिया
देहिया से टप–टप टपके पसेनवा
उगे रे मोर सुगना.....

ह्वेनसांग (अभिभूत होकर)– वाह! क्या मिठास है यहाँ की माटी की। माटी में रचे–बसे गीत की। इसीलिए तो यह देश 'सोने की चिड़िया' कहलाता है।

माँझी (सशंकित स्वर में)– सैनिको! सावधान!

सैनिका (समवेत रूप से)– क्या बात है? हुआ क्या?

माँझी– देखते नहीं? नदी में अचानक उफान आ गया है।

सैनिक– अब क्या हो? नाव डगमगा रही है।

ह्वेनसांग (भयभीत मुद्रा में) – एक तरफ नदी में उफान है, दूसरी ओर नाव का वजन काफी बढ़ गया है।

माँझी– आप ठीक कह रहे हैं, श्रीमान्! अगर वजन कम नहीं हुआ तो नाव डूब भी सकती है।

ह्वेनसांग– सैनिको! हमें इन पुस्तकों को नदी में शीघ्र फेंक देना चाहिए। तभी हमारी जान बच सकती है।

पहला सैनिक– ऐसा कैसे हो सकता है, महोदय?

ह्वेनसांग– क्यों? क्यों नहीं हो सकता ऐसा?

पहला सैनिक– ये अनमोल पुस्तकें हमारे देश की जान हैं। आन–बान–शान हैं।

दूसरा सैनिक– ये हमारी भारतीय धरोहर हैं। इनमें देश की आत्मा रची–बची है।

तीसरा सैनिक– जी हाँ, महाशय! भारतीय साहित्य, संस्कृति, दर्शन की अमिट निशानी हैं ये।

ह्वेनसांग– वो तो ठीक है, मगर..... दूसरा चारा भी क्या है। मनुष्य के प्राणों का मूल्य पुस्तकों से कहीं अधिक है।

सभी सैनिक– किन्तु.....।

ह्वेनसांग– अगर–मगर कुछ नहीं। हमें एक–एक कर पुस्तकों के बंडल नदी में फेंक देने चाहिए।

पहला सैनिक– नहीं महोदय! देश की इन अनमोल पुस्तकों के सम्मुख हमारे प्राणों का क्या मूल्य।

ह्वेनसांग– नहीं, ऐसा मत कहो। मनुष्य है तो पुस्तकें हैं।

पहला सैनिक– नहीं महोदय! ये कोई ऐसी–वैसी पुस्तकें नहीं हैं। देश का दर्पण है ये। मैं तो चला अपने देश की लिए....

(सैनिक नाव से नदी में कूदता है। 'छपाक' की आवाज गूँजती है।'

दूसरा सैनिक– मैं भी आ रहा हूँ, मित्र! जै भारत! (नदी में छलाँग लगाता है। 'छपाक' की आवाज।)

तीसरा सैनिक– छपाक!

चौथा सैनिक– छपाक!

पाँचवाँ सैनिक– छपाक!

(छपाक–छपाक की कई आवाजें।)

माँझी (आँसू पोंछते हुए)– महाशय! अब तक आपने भारत की गौरवशाली परम्परा देखी–परखी थी। अब देखिए– भारतीय सैनिकों का बलिदान।

ह्वेनसांग– देश के लिए इतना बड़ा बलिदान? धन्य है यह देश और यहाँ के देशवासी! मैं इन अमर वीरों के प्रति श्रद्धा–सुमन अर्पित करता हूँ। (श्रद्धा से शीश झुकाते हैं।)

(पर्दा गिरता है।)

– पटना (बिहार)

सितम्बर का देवपुत्र पढ़ा। विद्यालय, बरसात, भुट्टे, जामुन और बच्चे, सब मिलकर एक खूबसूरत समा बांध रहे हैं। ऐसा आवरण बच्चों के साथ–साथ बड़ों को भी लुभा रहा है। वर्षा की बूँद के माध्यम से बच्चों तक महत्वपूर्ण बात पहुँचाता संपादकीय अच्छा बन पड़ा है।

हमेशा की तरह ही इस बार भी अंक रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक है। विषय की विविधता और चित्रों का आकर्षण बच्चों को पत्रिका के प्रति आकर्षित करता रहेगा। सभी चित्र बहुत सुंदर बने हैं और उतने ही सुंदर रंगों से सजे भी हैं।

संपादक श्री. गोपाल माहेश्वरी जी एवं उनकी टीम की मेहनत स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही है। आप सभी को हार्दिक बधाई।

– नीलम राकेश, लखनऊ (उ. प्र.)

हवा का झोंका

– दीनदयाल शर्मा

जब भी खोलूँ से खिड़की, झट से
भीतर वह आ जाता।
कब जाता है बाहर जाने,
जादू उसको आता।।

कमरे में आता है तब ये,
महक फूल की लाता।
कर देता तरोजाता मुझको,
जब–जब है यह आता।।

हवा का झोंका बहुत ही प्यारा,
मेरे मन को भाता।
घर के दरवाजे से देखो,
वह घर में घुस जाता।।

बड़ा मस्त स्वभाव है उसका,
रहे सदा मुस्काता।
ऐसे मित्र पर गर्व करूँ मैं,
मुझको स्वस्थ बनाता।।

खेत, बगीचे जाऊँ कहीं भी,
मेरा साथ निभाता।
हुआ निहाल मैं उसको पा कर
मेरा सच्चा भ्राता।।

– हनुमानगढ़
(राजस्थान)

संस्कृत का चमत्कार

बच्चो! क्या किसी भाषा में केवल एक अक्षर से ही पूरा वाक्य लिखा जा सकता है? उत्तर है, संस्कृत को छोड़कर अन्य किसी भी भाषा में ऐसा करना असंभव है। उदाहरण–

''न नोननुन्नो नुन्नोनो नाना नानानना ननु।
नुन्नोऽनुन्नो ननुन्नेनो नानेना नुन्ननुन्ननुत्।।''

भावार्थ– हे नाना मुख वाले (नानानन)! वह निश्चित ही (ननु) मनुष्य नहीं है, जो अपने से कमजोर से भी पराजित हो जाए। और वह भी मनुष्य नहीं है (ना–अना) जो अपने से कमजोर को मारे (नुन्नोनो)। जिसका नेता पराजित न हुआ हो, वह हार जाने के बाद भी अपराजित है (नुन्नोऽनुन्नो)। जो पूर्णत: पराजित को भी मार देता है। (नुन्ननुन्ननुत्), वह पापरहित नहीं है (नानेना)।

ऐसे अनेक चमत्कार हैं संस्कृत भाषा में एक और देखिए एक ही शब्द क्रमश: बढ़ते हुए कैसे अपना अर्थ बदलता जाता है।

अहि: = **सर्प:**
अहिरिपु: = **गरुड:**
अहिरिपुपति: = **विष्णु:**
अहिरिपुपतिकान्ता: = **लक्ष्मी:**
अहिरिपुपतिकान्तातात: = **सागर:**
अहिरिपुपतिकान्तातातसम्बद्ध: = **राम:**
अहिरिपुपतिकान्तातातसम्बद्धकान्ता: = **सीता**
अहिरिपुपतिकान्तातातसम्बद्धकान्ताहर: = **रावण:**
अहिरिपुपतिकान्तातातसम्बद्धकान्ताहरतनय: = **मेघनाद:**
अहिरिपुपतिकान्तातातसम्बद्धकान्ताहरतनयनिहन्ता: = **लक्ष्मण:**
अहिरिपुपतिकान्तातातसम्बद्धकान्ताहरतनयनिहन्तृप्राणदाता: = **हनुमान्**
अहिरिपुपतिकान्तातातसम्बद्धकान्ताहरतनयनिहन्तृप्राणदातृध्वज: = **अर्जुन:**
अहिरिपुपतिकान्तातातसम्बद्धकान्ताहरतनयनिहन्तृप्राणदातृध्वजसखा = **श्रीकृष्ण:**
अहिरिपुपतिकान्तातातसम्बद्धकान्ताहरतनयनिहन्तृप्राणदातृध्वजसखिसुत: = **प्रद्युम्न:**
अहिरिपुपतिकान्तातातसम्बद्धकान्ताहरतनयनिहन्तृप्राणदातृध्वजसखिसुतसुत: = **अनिरुद्ध:**
अहिरिपुपतिकान्तातातसम्बद्धकान्ताहरतनयनिहन्तृप्राणदातृध्वजसखिसुतसुतकान्ता = **उषा**
अहिरिपुपतिकान्तातातसम्बद्धकान्ताहरतनयनिहन्तृप्राणदातृध्वजसखिसुतसुतकान्तातात: = **बाणासुर:**
अहिरिपुपतिकान्तातातसम्बद्धकान्ताहरतनयनिहन्तृप्राणदातृध्वजसखिसुतसुतकान्तातातसम्पूज्य: = **शिव:**
अहिरिपुपतिकान्तातातसम्बद्धकान्ताहरतनयनिहन्तृप्राणदातृध्वजसखिसुतसुतकान्तातातसम्पूज्यकान्ता: = **पार्वती**
अहिरिपुपतिकान्तातातसम्बद्धकान्ताहरतनयनिहन्तृप्राणदातृध्वजसखिसुतसुतकान्तातातसम्पूज्यकान्तापिता = **हिमालय:**
अहिरिपुपतिकान्तातातसम्बद्धकान्ताहरतनयनिहन्तृप्राणदातृध्वजसखिसुतसुतकान्तातातसम्पूज्यकान्तापितृशिरोवहा : = **गङ्गा, सा मां पुनातु** इति अन्वय:। अर्थात् वह गंगा मुझे पवित्र करे।

विश्व की किसी अन्य भाषा में इतना सामर्थ्य नहीं है।

नीति वचनम्

दूरस्थं जलमग्नस्थं धावन्तं धनगर्वितम्।
क्रोधवन्तं मदोन्मतं नमस्कारोऽपि वर्जयेत्।।

दूर खड़े या बैठे हुए, जल में नदी इत्यादि के बीच खड़े हुए, दौड़ते हुए, धन के अभिमान में डूबे, क्रोधित हो रहे, नशा किए हुए व्यक्ति को नमस्कार भी नहीं करना चाहिए।

बौद्धिक क्रीडा

मस्तिष्क का व्यायाम

– देवांशु वत्स

चींटी को शरीर में बने छिद्रों से ऑक्सीजन मिलता है। समुद्री घोड़ा गिरगिट की तरह रंग बदल लेता है।

बाल साहित्य के अनुभवी लेखक, सम्पादक और रूपान्तरकार–

देवेन्द्र कुमार

प्रस्तोता – डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय'

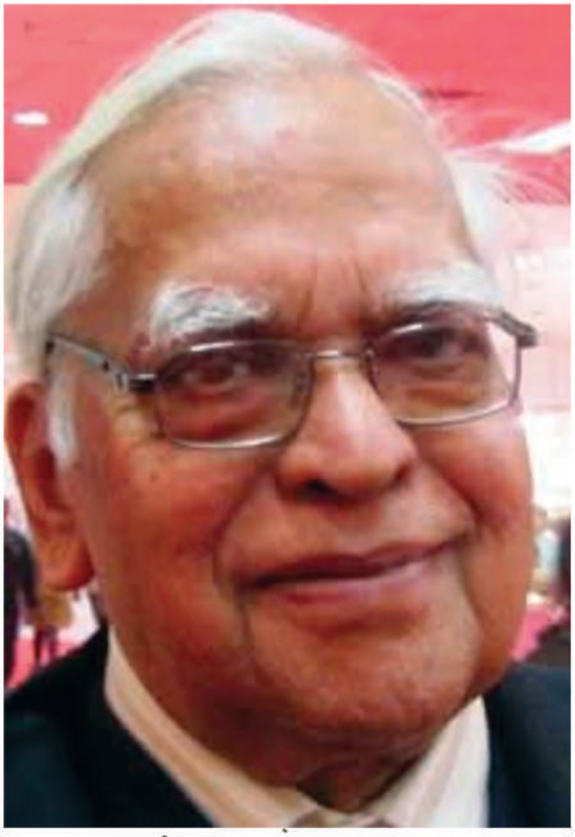

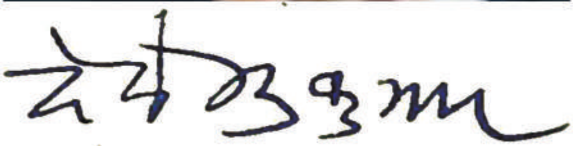

अपने समय की लोकप्रिय बाल पत्रिका नंदन के सम्पादकीय विभाग में २७ वर्ष सेवाएँ देने वाले देवेन्द्र कुमार हिंदी बाल साहित्य के क्षेत्र में ऐसे अकेले मनीषी हैं जिन्होंने कहानी और कविता लेखन के साथ–साथ विश्व कथा साहित्य के सर्वाधिक सार–संक्षेप भी प्रस्तुत किए। उन्होंने तीन सौ से अधिक पुस्तकों का संक्षेपण तैयार करने का रिकार्ड बनाया। उनकी रचनाओं में आधुनिक बाल जीवन की अंतरंग छटाएँ देखने को मिलती है।

देवेन्द्र कुमार का जन्म १९ अक्टूबर १९४० को दिल्ली में हुआ। उनके पिता का नाम था डॉ. रामदास और माता थीं विद्यावती। भला इससे बड़ा दुर्भाग्य और क्या होगा कि बचपन में ही उन्होंने अपने माता–पिता को खो दिया। जन्म के कुछ महीने बाद ही उनके पिता की मृत्यु हो गई और तीन वर्ष के बाद उनकी माँ का दूसरा विवाह इस शर्त पर कर दिया गया कि बालक देवन उनके साथ नहीं रहेंगे।

नानी के साथ बीता उनका बचपन किसी कहानी से कम नहीं है। जैसे संघर्षों की अग्नि में तपकर सोना निखरता है, कुछ वैसा ही देवेंद्र कुमार का जीवन उनकी मार्मिक आत्मकथा 'देवेंद्र नहीं... देवन' में देखा जा सकता है।

परिस्थितियों के कारण देवेंद्र जी की पढ़ाई–लिखाई भी अधिक नहीं हो पाई। लिखने का शौक तो बचपन से ही था लेकिन वे प्रकाशन के गणित से बहुत समय तक अनभिज्ञ रहे। जीविका के लिए भी उन्हें संघर्ष करना पड़ा। उन्होंने अपनी रुचि के बल पर पत्रकारिता के क्षेत्र में स्वयं को पारंगत किया। पहले उन्हें दिल्ली प्रेस की पत्रिका सरिता में संविदा पर काम मिला। उन्होंने लेखन की शुरुआत बड़ों के लिए लिखने से की और बाद में बाल साहित्य से जुड़ गए।

इसका श्रेय पराग के तत्कालीन संपादक आनंद प्रकाश जैन को जाता है। जिन्होंने १९७० में न केवल पराग में उनकी कहानी 'अध्यापक' को प्रकाशित किया। बल्कि निरंतर लिखने के लिए भी खूब प्रेरणा दी। उनका गुरुमंत्र वरदान की तरह सारे जीवन उनके काम आया। १९७१ में नंदन में उप सम्पादक की नौकरी मिलने से उनकी बाल साहित्य की अभिरुचि को खूब विस्तार मिला। १९७३ में उनके बाल उपन्यास 'हीरों के व्यापारी' को भारत सरकार के प्रकाशन विभाग ने प्रकाशित किया था।

नंदन के स्थायी स्तंभ 'विश्व की महान

कृतियाँ' के बहाने उन्होंने विश्व के उत्कृष्ट कथा साहित्य का खूब अध्ययन किया। उनके नाम तीन सौ से अधिक पुस्तकों के सार संक्षेप लिखने का रिकॉर्ड है। नंदन के बाद बाल भारती पत्रिका में भी उनके रूपांतरण खूब चर्चित हुए।

देवेंद्र कुमार जी ने बड़ों के लिए खूब लिखा ही, बाल साहित्य का तो जैसे भंडार भर दिया। उनकी चर्चित बाल पुस्तकों की बड़ी संख्या है।

बाल उपन्यास– हीरों के व्यापारी, नानी माँ का महल, पेड़ नहीं कट रहे हैं, चिड़िया और चिमनी, एक छोटी बाँसुरी, खिलौने, अधूरा सिंहासन, नीलकान, जंगल की पुकार, सात बाल उपन्यास।

बाल–कथा साहित्य– लक्षद्वीप की समुद्री कथाएँ, घर से दूर, फूल जैसी लड़की, इक्यावन बाल कहानियाँ, मेरी प्रिय बाल कहानियाँ, बच्चों की ग्यारह कहानियाँ, कबूतरों वाली हवेली, बड़े बोल का सिर नीचा, पिता लौट आओ, धत् जादूगर, चादर बोली, नाक के बदले नाक, कठपुतली के खेल, बाँस में बारूद, एक और खजाना, चील वाले बाबा, यूरोप की सर्वश्रेष्ठ लोककथाएँ, एशिया की सर्वश्रेष्ठ लोककथाएँ, देश देश की रोचक कथाएँ, यूनान की प्राचीन लोक कथाएँ, रोमांचक जासूसी कहानियाँ, साहसी समुद्री वीरों की सच्ची गाथाएँ, रोमांचक शिकार कथाएँ, तेनालीराम की कहानियाँ, ३१ बाल कहानियाँ, ५१ बाल कहानियाँ, बाल कथा सागर।

बाल कविता संग्रह– हिन्दी के नए बाल गीत, ५१ बालगीत, १०१ बालगीत, मेरे प्रिय बाल गीत, यह है हँसने का स्कूल, १२५ बाल गीत, हँसकर मिले किताब। देवेंद्र जी यश की कामना और प्रचार–प्रसार की भावना से दूर बस, अपने लेखन में मगन या कहें कि डूबे रहे। उनका बाल साहित्य सरल, सहज और मनोरंजक है। उनके बाल साहित्य का शिल्प बड़ा ही अनूठा है। कहानी कला के तो वे जैसे पारंगत ही थे। उनके बाल साहित्य को पढ़कर बाल साहित्य की सच्ची परिभाषा को समझा जा सकता है। २० फरवरी २०२६ को दिल्ली में उनका निधन हो गया। आइए, उनकी एक रोचक और प्रेरक बाल कहानी का रसास्वादन करते हैं–

कहानी

खिचड़ी–दलिया

यह आज पाँचवीं बार था जब पिताजी ने अजीत को मना किया था। कई दिन से अजीत देख रहा है कि जब भी वह घूमने जाने की बात कहता है, पिताजी मना कर देते हैं। कह देते हैं, ''फिर चलेंगे। आज समय नहीं है।'' अजीत माँ की ओर देखता है तो वह भी कह देती है– ''ठीक है बेटे! फिर कभी चलेंगे। अभी पिताजी को कुछ आवश्यक काम है।''

अजीत को लगता है, पिताजी को उसकी परवाह ही नहीं, इसीलिए तो हर बार उसकी बात को टाल जाते हैं। पिताजी से कहने की हिम्मत नहीं हुई, पर माँ से तो उसने कह ही दिया, ''पिताजी ऐसा क्या आवश्यक कार्य करते हैं?'' माँ लता ने गंभीर स्वर में कहा, ''नहीं बेटा! पिताजी को गलत मत समझो। वे रात में भी देर से आते हैं।'' इस पर अजीत और भी चिढ़ गया। माँ भी पिताजी की ही तरफदारी कर रही थीं। वह घर में छोटा है न इसलिए माँ–पिताजी उससे कुछ भी कह देते हैं। और जैसे माँ ने भी उसे चिढ़ाने की ठान ली है। अजीत खिचड़ी–दलिया पसंद नहीं करता, क्योंकि बुखार आने पर माँ खिचड़ी–दलिया ही खिलाती हैं। तब तो न चाहने पर भी उसे जबरदस्ती खाना ही पड़ता है। पर आजकल शाम के समय वह घर में प्रतिदिन खिचड़ी–दलिया बनते देखता है।

वह कह देता है, ''माँ! यह रोज–रोज खिचड़ी–दलिया क्यों बनाती हो? मैं नहीं खाऊँगा।''

''ठीक है, तुम मत खाना। मुझे पता है तुम्हें खिचड़ी–दलिया अच्छा नहीं लगता।'' माँ कह देती

है। अजीत हैरान रह जाता है। खिचड़ी–दलिया वह स्वयं नहीं खाता, माँ–पिताजी भी पसंद नहीं करते, फिर माँ बनाती क्यों हैं, यह बात उसकी समझ में नहीं आती। अब तो जैसे यह बात पूरी तरह दिमाग में बैठ गई है कि माँ–पिताजी दोनों उसकी परवाह नहीं करते। छोटा है तो क्या हुआ, इतना छोटा भी नहीं कि अपना क्रोध न दिखा सके।

संध्या को अजीत को अवसर मिल ही गया। माँ ने एक परचा देकर कहा, ''जरा पंसारी की दुकान पर जाकर यह सामान का परचा दे आओ। वह आज या कल दिन में भिजवा देगा।''

''मैं नहीं जाता। आप या पिताजी जाइए, जब आप मेरी बात नहीं मानते तो मैं भी आपका कहना नहीं मानूँगा।''

लता अजीत की ओर देखती रह गई। वह अनुभव कर रही है इधर कुछ दिनों से अजीत कुछ अधिक ही उग्र हो उठा है। उसके पिताजी से शिकायत की तो उन्होंने कह दिया, ''बच्चा है, मन में किसी बात पर क्रोध आ गया होगा, इसीलिए ऐसा व्यवहार कर रहा है।''

अजीत ने माँ की बात नहीं सुनी और अपने मित्र अरुण के घर की ओर चल दिया। मन में दुखी था, सोच रहा था, 'जब भी मैं घूमने जाने के लिए कहता हूँ तो पिताजी मना क्यों कर देते हैं?' अजीत को अच्छी तरह पता है, माँ–पिताजी दोनों ही उसे खूब प्यार करते हैं, पर इधर कुछ दिनों से उनका स्वभाव कुछ बदल गया है– पता नहीं क्यों?

दोस्त के घर जाते समय अजीत ने अपने पिताजी को देखा। वह डॉक्टर के दवाखाने से निकल रहे थे। अजीत चौंक गया–पिताजी डॉक्टर के पास क्यों आए हैं? क्या उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं? लेकिन माँ ने तो ऐसा नहीं कहा, और देखने में पिताजी

बीमार लगते भी नहीं। तो क्या माँ का स्वास्थ्य ठीक नहीं है? अजीत के मन में धुकधुकी होने लगी। पिताजी स्कूटर पर बैठकर जा चुके थे। वह भी जल्दी-जल्दी घर लौट आया। पिताजी अभी घर नहीं पहुँचे थे। वह हैरान रह गया। उन्हें तो अब तक आ जाना चाहिए था, क्योंकि वह तो स्कूटर पर थे। उसने माँ से पूछा, ''माँ! तुमने बताया नहीं कि पिताजी का स्वास्थ्य ठीक नहीं है।''

''यह तुमसे किसने कहा? तुम्हारे पिताजी तो एकदम ठीक हैं।'' लता बोली। ''तब पिताजी डॉक्टर के पास क्यों गए थे, क्या तुम्हारी दवा लेने?''

''अरे! मुझे क्या हुआ है। मैं भी एकदम ठीक हूँ।'' कहते-कहते लता का स्वर गंभीर हो गया। उसने बताया, ''तुम्हारे पिताजी के एक अध्यापक हैं। पिताजी बचपन में उन्हीं से पढ़े थे। आजकल मास्टरजी बीमार चल रहे हैं। अपने घर में एकदम अकेले हैं। मास्टरजी के बेटा-बहू विदेश में हैं। उन्हें समाचार दे दिया है। वे कुछ ही दिनों में आने वाले हैं। जब तक वे नहीं आ जाते, तुम्हारे पिताजी मास्टरजी की देखभाल कर रहे हैं।?''

''तो क्या पिताजी संध्या को कार्यालय से आते ही उन्हीं की दवाई लेने जाते हैं डॉक्टर के पास?'' अजीत को जैसे अँधेरे में प्रकाश दिखाई दे रहा था। ''हाँ! संध्या को डॉक्टर से दवा लेकर तुम्हारे पिताजी अपने मास्टरजी के पास जाते हैं। दिन में कुछ देर के लिए मैं भी उनके पास चली जाती हूँ खाना लेकर। शाम को उनके लिए खाना तुम्हारे पिताजी ले जाते हैं।'' ''तो क्या खिचड़ी-दलिया रोज पिताजी के मास्टरजी के लिए बनाती हैं आप?''

''और नहीं तो क्या!''

''तो यह बात आपने मुझे क्यों नहीं बताई!'' अब अजीत को माँ पर क्रोध आ रहा था।

''बेटा! तुम्हारे पिताजी ने मुझे बताने से मना कर दिया था। वह सोचते हैं कि तुम अपनी फरमाइश पूरी न होने के कारण आजकल नाराज रहते हो। और तुम्हारे पिताजी शाम के समय मास्टरजी को एकदम अकेला नहीं छोड़ सकते।'' अजीत की आँखों के सामने पड़ा कोई परदा जैसे एकदम हट गया। पिताजी उसे इसलिए नहीं ले जा सकते, क्योंकि उन्हें मास्टरजी के साथ रहना होता है। और वह इसे अपने प्रति पिताजी की उपेक्षा समझ रहा था।

''माँ! मुझे बताइए, पिताजी के मास्टरजी कहाँ रहते हैं? मैं भी वहाँ जाऊँगा। शाम को डॉक्टर से उनकी दवा तो मैं भी ला सकता हूँ हर दिन।''

''लेकिन तुम तो अपने पिताजी से नाराज हो...।'' लता ने कहना चाहा तो अजीत ने माँ की बात पूरी नहीं होने दी। वह दौड़कर माँ से लिपट गया। उसकी आँखें गीली हुई जा रही थीं, ''माँ! क्या मैं इतना बुरा लड़का हूँ जो यह बात भी नहीं समझेगा।''

लता उसे बाँहों में भरकर हौले-हौले कमर थपथपाती रही। उसने कहा, ''नहीं रे, मैं क्या जानती नहीं कि तू अपने पिताजी से कितना प्यार करता है। बस तेरे पिताजी अपने मास्टरजी की बीमारी की बात बताकर तुम्हें परेशान नहीं करना चाहते थे।''

''माँ!'' अजीत इतना ही कह सका। उसका गला रुँध गया था। शब्द बाहर नहीं आ रहे थे। आँखें डबडबा उठी थीं।

''मुझे अभी जाना है पिताजी के पास।'' अजीत ने कहा। लता ने कहा- ''चल, मैं भी चलती हूँ तेरे साथ।''

''चलो माँ और वादा करो कि कोई भी बात मुझसे छिपाओगी नहीं।'' अजीत ने कहा, ''नहीं तो मैं आपसे खूब लड़ाई करूँगा।''

''हाँ-हाँ, वादा करती हूँ कि कोई भी बात सबसे पहले तुझे ही बताऊँगी। बस...'' और लता हँस पड़ी। अजीत मुस्कराए बिना न रह सका।

- शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

जरा बताओ तो...

प्रस्तुति-संकेत गोस्वामी

इस ग्रह को अपनी धुरी पर एक चक्कर लगाने में 24 घंटे 37 मिनट लगते हैं. लौह ऑक्साइड के कारण इसकी सतह लाल है. सूर्य की परिक्रमा वह 687 दिन में करता है. क्या नाम है इसका?

1

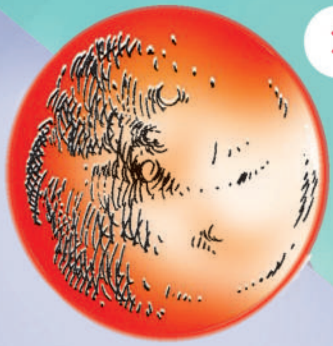

2

यह गैस हँसाती है. इसे सूंघने पर शरीर में अजीब सी गुदगुदी और संवेदना होती है जिससे मनुष्य हँसने लगता है. यह कौनसी गैस है ?

3

यह हमारे देश में झंडे के बीच वाली पट्टी पर बना होता है. इसमें 24 तीलियाँ हैं और इसका नाम एक महान राजा के नाम पर है. क्या कहते हैं इसे?

सही उत्तर - 1. मंगल 2. नाइट्रस ऑक्साइड 3. अशोक चक्र

पुरस्कार सच बोलने का

– डॉ. रामसिंह यादव

छत्रपति महाराज शिवाजी के समय की घटना है। उनके महाराष्ट्र राज्य में उन्हीं दिनों एक बारह वर्षीय बालक जिसका नाम मालोजी था। वह गरीब बालक अपनी माँ के साथ एक कच्चे जर्जर टूटे–फूटे घर में रहता था। मालोजी की माता अधिकांश बीमार रहती थी। इसलिए उसकी माँ से कुछ भी काम नहीं होता था। बालक मालोजी भी अभी छोटा था, किन्तु जो भी काम उसको मिल जाता था वह करता और जितना भी धन मिलता उसी से माँ–बेटे रूखा–सूखा खाकर समय व्यतीत करते। कभी–कभी तो आधे पेट भूखे ही रहना पड़ता था।

इसी संकट के दौर में माँ–बेटे के दिन व्यतीत हो रहे थे। एक दिन बालक मालोजी को ईंट–पत्थर–बालू रेत ढोने की कठोर परिश्रम करते हुए देखकर एक आदमी ने पूछा ''ऐ छोटे बच्चे! तुम इतना कठोर परिश्रम करने के बाद यहाँ से कितना धन पा जाते हो?''

''बहुत ही कम, बस एक दिन की रोटी–दाल का।''

''कौन–कौन है तुम्हारे घर में?''

मालोजी ने कहा ''मैं और मेरी बीमार माँ।''

उस आदमी ने कहा– यदि तुम मेरा एक काम कर दो तो मैं तुम्हें मुँह माँगा धन दूँगा। फिर तुम व तुम्हारी माँ आराम के साथ अपने दिन व्यतीत कर सकोगे।

उस आदमी की बात सुनकर बालक मालोजी की बाँछें खिल गई। उत्सुकता से उसने पूछा ''काम क्या करना होगा?''

तब उस आदमी ने कहा ''बेटा! तुमने महाराष्ट्र के सिंह 'महाराजा छत्रपति शिवाजी' का नाम तो सुना ही होगा। शिवाजी को यदि तुम जान से मार डालने का काम कर सको तो तुमको मुँह माँगी धन–दौलत पुरस्कार दूँगा।''

बालक मालोजी उस दुष्ट आदमी को जानता पहिचानता नहीं था। लेकिन उसकी बात से उसको यह समझ में आ गया कि यह आदमी चाहे जो भी हो पर है छत्रपति शिवाजी महाराज का दुश्मन। मालोजी ने सोचा यह तो बहुत कठिन मुश्किल काम है। वह शिवाजी महाराज के पास तक पहुँच ही कैसे पाएगा? और यदि किसी तरह पहुँच भी गया तो अवश्य पकड़ लिया जाएगा। लेकिन दूसरे ही क्षण उसने सोचा यदि वह किसी तरह शिवाजी महाराज को मार सकने में सफल हो गया तो उसकी गरीबी जाती रहेगी। अपनी बीमार माता का उपचार करवा सकेगा, क्योंकि यह आदमी उसे बहुत सारा धन देगा।

मालोजी ने यह सोचकर उस अपरिचित आदमी से कहा ''ठीक है, मैं शिवाजी महाराज की हत्या करूँगा। उन्हें समाप्त करने का प्रयत्न करूँगा। लेकिन ऐसा तो नहीं है कि आप मुझे पुरस्कार देने से मुकर जाए।'' बालक बुद्धि ने संशय प्रकट किया।

''नहीं, तुमको ऐसा नहीं सोचना चाहिए। हम भी अपनी जुबान के सच्चे और पक्के हैं।'' उस आदमी ने बालक मालोजी को पूर्ण विश्वास दिलाया। उस आदमी की बात पर विश्वास करके आश्वस्त होकर बालक मालोजी छत्रपति शिवाजी महाराज को मारने उनकी हत्या करने के उपाय का ताना–बाना अपने नन्हें मस्तिष्क में बुनने लगा।

एक दिन रात्रि में किसी प्रकार मालोजी एक तेज धारदार कटार के साथ शिवाजी के शयन कक्ष में घुसने में आखिर सफल हो गया। लेकिन कमरे में घुसते ही कोई वस्तु उसके पैर से टकरा गयी और वह धम्म से फर्श पर गिर पड़ा। उसके गिरने की आवाज से शिवाजी महाराज की नींद खुल गई। एक बालक को हाथ में कटार लिए देखकर उन्होंने पूछा– ''ऐ

बालक! तुम कौन हो? मेरे शयनकक्ष में क्यों और कैसे आए हो?''

''शिवाजी महाराज! मेरा नाम मालोजी है। मैं आपको जान से मारने आया हूँ। आपकी हत्या करने के लिए। मेरी माँ बहुत दिनों से बीमार है। मुझे भी अधिक काम नहीं मिल पाता, इसलिए बीमार माँ का उपचार नहीं करा पाता हूँ। हम माँ बेटे दोनों अधिकांश भूखे रह जाते हैं। माँ की दवा के लिए भी मेरे पास धन नहीं है। एक आदमी ने जिसे मैं नहीं जानता पहिचानता मुझसे कहा कि यदि मैं आपको जान से मार देता हूँ। हत्या कर देता हूँ तो वह मुझे मुँहमाँगा धन देगा। बस मैं आपको जान से मारने आ गया। कटार लेकर यह देखो।'' मालोजी एक साँस में बोल गया।

तब तक छत्रपति शिवाजी महाराज के सेनापति वीर तानाजी भी वहाँ आ गए। मालोजी के आने का और उसकी सब बातें तानाजी ने सुन ली थीं। क्रोधित होकर तानाजी ने कहा ''मूर्ख लड़के! धन-दौलत के लालच में तू महाराज छत्रपति शिवाजी को मारने आ गया। तूने यह सोचा भी कैसे? ठहर पहले तुझे ही मैं समाप्त करता हूँ।''

बालक मालोजी ने समझ लिया था कि अब वह यहाँ से जीवित तो कभी नहीं जा सकता है। लेकिन वह डरा नहीं, वह भयभीत नहीं हुआ। उसे बस अपनी माँ की चिन्ता थी। कम से कम बीमार माँ को तो बता दूँ सोचता हुआ बोला ''सेनापति जी! मैं राजपूत मर्द मराठा हूँ। मरने से नहीं डरता लेकिन अपनी बीमार माँ को बता देता तो मुझे तसल्ली रहती। माँ मेरे लिए सब कुछ है भगवान से भी अधिक। यदि आप आज्ञा दें तो

मैं अपनी माँ को बताकर तुरन्त वापस आ जाऊँगा।''

''बालक! क्या मूर्ख समझता है? इसी बहाने यहाँ से प्राण बचाकर भाग जाना चाहता है।'' सेनापति तानाजी ने उसे घुड़की लगाई।

''नहीं सेनापति जी! मैं झूठ नहीं बोलता। आज तक कभी झूठ बोला भी नहीं। मैं माँ को बताकर उसे मिलकर अवश्य आ जाऊँगा।'' गिड़गिड़ाने के बावजूद बालक मालोजी की आवाज मैं विश्वास निडरता और दृढ़ता की झलक स्पष्ट थी।

छत्रपति शिवाजी महाराज को उस नादान बालक पर तरस आ गया। उसकी बात पर विश्वास करके उन्होंने कहा ''ठीक है मालोजी! तुम जाओ ओर अपनी माँ से मिलकर वापस आ जाओ।'' बालक तत्काल ही वहाँ से बाहर निकल गया।

अपने वचन अनुसार मालोजी दूसरे दिन वापस शिवाजी के पास आ गया और उनसे हाथ जोड़कर विनम्रता से बोला ''महाराज! मैं आ गया हूँ। माँ से मिलकर उन्हें सब बातें बता दीं। अब आप मुझे मेरे अपराध के लिए जो भी सजा देना चाहें दे दीजिए। आपने मुझ पर जो विश्वास करके मुझे मेरी माँ से मिलने जाने दिया मैं आपका आभारी हूँ।'' बोलते-बोलते मालोजी की आँखों में आँसू आ गए, यह सोचकर की अब माँ का क्या होगा? अब वह माँ से कभी नहीं मिल पाएगा।

मालोजी की सत्यवादिता से प्रभावित होकर शिवाजी उसको अपलक देखते रहे। फिर एकाएक उठकर उन्होंने उसको गले से लगा लिया और भाव विभोर होकर बोले ''बालक मालोजी तुम वीर और सत्यवादी दोनों हो। इसलिए हमारे इस भारत देश हिन्दुस्थान के भविष्य के गौरव प्रदान कराने वाले महान रत्न रूपी धरोहर हो। अत: मैं तुमको तुम्हारे अपराध से क्षमा करके अपनी सेना में भरती करने का आदेश देता हूँ। कहकर शिवाजी ने तानाजी की तरफ मुखातिब होकर कहा तानाजी अब मालोजी बालक है। पर सेना में भरती करने के लिए अभी से ही इसका नाम लिख लीजिए। अभी कुछ समय यह युद्ध कला का अभ्यास करेगा, तत्पश्चात् वयस्क होने पर हमारी मराठा सेना की शोभा बढ़ाएगा।''

शिवाजी की उदारता देखकर चारों तरफ लोग अचंभित थे। उनकी जय-जयकार की आवाज गूँजने लगी। मालोजी जो घृणित और ओछे प्रयास शिवाजी की हत्या का कर चुका था। शिवाजी महाराज की इस महानता से आश्चर्य चकित रह गया, उसकी आँखों में हर्ष के आँसू बह चले। उसने झुककर शिवाजी का चरण स्पर्श किया और जाने को मुड़ा ही था कि शिवाजी ने उसे रोकते हुए कहा- ''बालक मालोजी! हमें तुम्हारी सत्यवादिता पर गर्व है, तुम अपना सच्चाई का पुरस्कार लेते जाओ।''

मालोजी वही रुक गया और हाथ जोड़कर अत्यंत विनम्रता से बोला महाराज आपने मुझे क्षमा करके जो पुरस्कार दिया है वह क्या मेरे और मेरी माँ के लिए कम है?

तुम बहुत समझदार हो बालक मालोजी! यह

पुरस्कार तुमको प्रथम बार सत्य बोलने के लिए मिला है जब तुमने निर्भय होकर बताया कि मेरे शयन कक्ष में तुम किस लिए आए थे।

और यह पुरस्कार माँ से बताकर वापस आने की सत्यवादिता का है कहकर शिवाजी ने कोषाध्यक्ष की तरफ देखकर कहा बालक मालोजी को उसकी बीमार माँ के उपचार के लिए दोनों माँ बेटे के जीवन यापन करने के लिए पर्याप्त धन पुरस्कार स्वरूप प्रदान किया जाए।

अब तक दाने-दाने को तरसते भूखों मरने वाला बालक मालोजी अपनी सत्यवादिता सच बोलने के कारण पुरस्कार लेकर खुशी-खुशी अपनी माँ के पास चल पड़ा। ऐसे थे गुणग्राहक छत्रपति शिवाजी महाराज।

– उज्जैन (म. प्र.)

सुभाषित

ऊपर से दिखता भले, निर्धन, निबल, अतेज।
बुद्धिमान ही परखते, छुपे गुणों का तेज।।
साधारण लगती भले, हो सीपी की खोल।
संभव है भीतर मिले, मोती अति अनमोल।।
कंकर, पत्थर, कोयला, क्या करिये अनुमान।
गहरे खोद के देखिए, संभव हीरा खान।।
कड़ा आवरण देखकर, करो न हल्का मोल।
भीतर मीठा खोपरा, ऊपर नरियल खोल।।

पहेलियाँ

– श्यामपलट पांडेय

१)
सबके आसपास ही रहती,
मुफ्त सभी को है मिल जाती।
मिलती नहीं अन्य ग्रह पर वह,
हम सब की साँसों में गाती।

२)
मुझसे ही पकता है खाना,
दाल-भात, रोटी सब पकते।
नुक्ती, घेवर और इमरती,
हलवाई दुकान में छनते।।

३)
'क' को मिटाओ 'मल' बन जाऊँ,
'ल' को हटा दो 'कम' कहलाऊँ।
माँ लक्ष्मी का हूँ मैं आसन,
कीचड़ में भी खिल सुख पाऊँ।।

४)
हाथी भी मुझसे है डरता,
बूझो, मेरा नाम बताओ।
छोटी मगर खूब काली हूँ,
चीनी जहाँ, वहीं पर आओ।।

५)
आसमान में दौड़ा करते,
जल के अनेक घड़े छिपाए।
जब भी वर्षा ऋतु है आती,
रिमझिम की फुहार मन भाए।।

– लखनऊ (उ. प्र.)

उत्तर- १) प्राणवायु (ऑक्सीजन)। २) आग। ३) कमल। ४) काली चींटी। ५) बादल।

दोहे– तुलसी जयन्ती श्रावण शुक्ल सप्तमी

तुलसी की पहचान

– गोपाल माहेश्वरी

तुलसी की पहचान है,
भक्ति भरा सु–कवित्व।
प्रमुख ग्रंथ के नाम यहाँ,
पढ़िये देकर चित्त।।

रामचरित मानस विमल रामकथा गान।
अवधी में तुलसी किया जैसे अमृत दान।।
रामलला नहछू कहे राम विवाह की रीत।
तुलसीकृत इस काव्य से रामसिया में प्रीत।।
रच **वैराग्य संदीपनी** तुलसी कहते ज्ञान।
मायावी संसार में होता सच का भान।।
बरवै रामायण रची बरवै छन्द विधान।
सियाराम के चरित का है सुन्दर गुणगान।।
पार्वती मंगल परम मंगल कथा सुजान।
शिवा महेश्वर ब्याह का मधुर मनोहर गान।।
जानकी मंगल काव्य में सीताराम विवाह।
जैसे अमृत की सरित अविरल बहे प्रवाह।।
रामाज्ञा प्रश्नावली शगुन शास्त्र की रीत।
चौपाई के वर्ण से उत्तर मिले सुभीत।।
विनय पत्रिका में विनय नाना सुर की कीन्ह।
सबसे रामभगति की शुभाशीष ही लीन्ह।।
कवितावली में छन्द हैं सुन्दर विविध प्रकार।
तुलसी के आराध्य हैं एक राम अवतार।।
गीतावली सुग्रन्थ है तुलसीदास प्रणीत।
रामकथा के हैं सरस सुन्दर सुरमयगीत।।
दोहावली मैं लिख दिए दोहे विविधप्रकार।
नीति, ज्ञान और भक्ति से है अद्‌भुत भंडार।।
लिखी **कृष्ण गीतावली** तुलसी कहते सन्त।
लीलाएँ गोपाल की रची अमित रसवंत।।
श्रीहनुमान की स्तुति रची **चालीसा** का रूप।
वंदित **बजरंग बाण** में है हनुमान स्वरूप।।
संकट मोचन हनुमान का **अष्टक** हुआ प्रसिद्ध।
हनुमान बाहुक हुआ भक्ति स्तोत्र अति सिद्ध।।
ऐसी कविकुल तिलक हैं भक्तों के सिरमौर।
तुलसीदास की भक्ति की कीरती चारों ओर।।

– इन्दौर (म. प्र.)

पहेलियाँ

बूझो तो जानें

– डॉ. राकेश चक्र

पैने दो–दो सींग जड़े हैं
हरा–हरा है छिलका।
पानी फल मीठा–मीठा है,
सूखा आटा मिल का।।
नाम बताओ कौन चेस्टनट?
कौन है संघाटिका?
कहे उसे हम वारिकुंज भी,
कौन है विषाणिका?

उथले पानी में है होता,
फाइबर होता है भरपूर।
प्रोटीन, पोटैशियम इसमें,
थायराइड को करता दूर।।
विटामिन बी छः भी इसमें,
मोटापा को दूर भगाता।
शृंगमूल, जलकंटक भी कहते,
दूर तनाव मौज बढ़ाता।।
हलवा खाओ, स्वाद बढ़ाओ,
व्रत त्यौहारों काम जो आता।
कौन विषाणी भारत का है?
शक्ति अपनी सदा बढ़ता।।

– शिवपुरी मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)

सबका उत्तर – सिंघाड़ा।।

गिठान

चित्रकथा–

अरे कालीचरण, बालों में गिठान क्यों बांधी है ?
रामधन जी मेरे मालिक ने कहा था जब कोई गिठान का जिक्र छेड़ेगा..
..तो मुझे उनका बताया काम याद आ जाएगा ताकि मैं भूलूं नहीं..
तो किस काम के लिए ये गिठान लगवाई थी तुम्हारे मालिक ने.?
जी, गिठान बंधवाने के बाद वो काम बताना ही भूल गए...

तो न होता पाकिस्तान का निर्माण

– डॉ. उमेश प्रताप वत्स

१८५७ की क्रांति निर्धारित तिथि से पहले ही शुरू हो गई थी। १८५७ की क्रांति १० मई, १८५७ को मेरठ में शुरू हुई थी, जबकि इसकी योजना तत्कालीन प्रमुख क्रांतिकारी नानासाहिब, तात्या टोपे, रानी लक्ष्मीबाई, कुँवर सिंह, मंगल पांडे आदि ने विचार विमर्श कर ३१ मई को रात १२ बजे से प्रारंभ करने के लिए बनाई गई थी। यही कारण रहा कि क्रांति शुरू कर चुके और कुछ क्षेत्रों में ३१ मई की प्रतीक्षा करने के बाद ही क्रांति प्रारंभ की गई जिस कारण अँग्रेजों ने २० दिन का समय मिलने पर ब्रिटेन से अतिरिक्त फौज बुलाकर क्रॉंति को कुचलकर रख दिया। यदि यह क्रांति निर्धारित समय ३१ मई को ही प्रारंभ होती तो अँग्रेजी हुकुमत को संभलने का अवसर न मिल पाता और एक दिन, एक समय एक साथ पूरे देश में सामूहिक आक्रमण से अँग्रेजी हुकुमत को उखाड़कर भारत १८५७ में ही स्वदेशी सरकार बनाकर स्वतंत्र हो गया होता। ऐसा होने पर पाकिस्तान की माँग का कोई औचित्य नहीं रहता, हमारे पड़ोस में एक दुश्मन देश का निर्माण न होता और हम अखंड भारत के रूप में विश्व के अग्रणी देश के रूप में स्थापित हो चुके होते।

किन्तु कहते हैं कि होनी बलवान है। हमें इतिहास की भूलों से सबक लेना चाहिए और वर्तमान में हमने सबक लिया भी है, कभी बिना किसी गलती के आज हम पाकिस्तान की करतूतों का उचित जवाब भी दे रहे हैं।

उल्लेखनीय है कि १० मई १८५७ को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की शुरुआत मेरठ छावनी से हुई, जहाँ भारतीय सैनिकों ने चर्बी वाले कारतूसों के उपयोग से इनकार कर दिया था। यह विद्रोह बाद में पूरे भारत में फैल गया और इसे प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के रूप में जाना जाता है। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने नई राइफलों के लिए कारतूसों का उपयोग शुरू किया था, जिनमें गाय और सूअर की चर्बी लगी होती थी। यह भारतीय सैनिकों के धार्मिक विश्वासों के खिलाफ था। ९ मई १८५७ को, मेरठ छावनी में सैनिकों ने चर्बी वाले कारतूसों के उपयोग से इनकार कर दिया था। जिसके लिए उन्हें दण्ड दिया गया था।

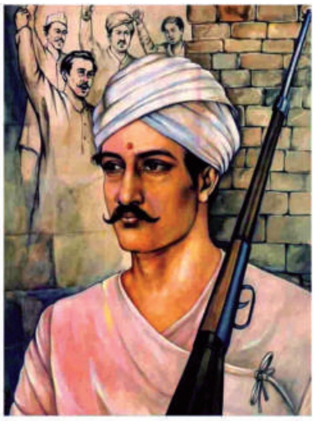

मंगल पांडे

मेरठ छावनी में १० मई १८५७ को भारतीय सैनिकों ने विरोध प्रारंभ कर दिया और अँग्रेजों के विरुद्ध हथियार उठा लिए। मेरठ से प्रारंभ हुआ विरोध धीरे–धीरे पूरे भारत में फैल गया और दिल्ली, कानपुर, झाँसी और अन्य शहरों में भी अँग्रेजों के विरुद्ध जबरदस्त विरोध हुआ।

इस विरोध में कई भारतीय शासकों और नेताओं ने भी भाग लिया। ब्रिटिश सरकार ने विरोध के रूप में इस क्रांति को दबाने के लिए कड़ी कार्रवाई की और कई भारतीय शासकों और नेताओं को फाँसी पर लटका दिया। ब्रिटिश सरकार द्वारा क्रांति को तो दबा दिया किन्तु इसने भारत में राष्ट्रीयता की भावना को और मजबूत किया और भारत की आजादी की लड़ाई को और आगे बढ़ाया।

१८५७ की क्रांति के सबसे महत्वपूर्ण नेता रानी लक्ष्मीबाई, मंगल पांडे, नाना साहब, तात्या टोपे, मानसिंह और कुँवर सिंह सहित कई अन्य उल्लेखनीय स्वतंत्रता सेनानियों ने संग्राम का नेतृत्व करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। १८५७ की क्रांति में नाना साहिब, तात्या टोपे और लक्ष्मीबाई की

योजना ब्रिटिश शासन के विरुद्ध एक व्यापक संग्राम करना था।

नाना साहिब को कानपुर में ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना का कमांडर–इन–चीफ बनाया गया, जबकि तात्या टोपे ने रानी लक्ष्मीबाई को समर्थन दिया और गुरिल्ला युद्ध के माध्यम से अँग्रेजों की नाक में दम कर दिया। तात्या टोपे ने अँग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष जारी रखा। १८५७ के बाद भी, उन्होंने कई महीनों तक अँग्रेजों के विरुद्ध जंगलों और पहाड़ियों में युद्ध लड़ा। मई १८५७ में कानपुर में ईस्ट इंडिया कंपनी को हराकर, उन्होंने जनरल विन्धम को ग्वालियर छोड़ने पर मजबूर किया। तात्या टोपे ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक अमूल्य योगदान दिया।

अँग्रेज सरकार ने तात्या टोपे को ७ अप्रैल १८५९ को पाड़ौन के जंगलों से पकड़ा। १५ अप्रैल १८५९ को सैनिक अदालत में मुकदमा चलाया गया। उसी दिन फैसला सुनाकर १८ अप्रैल १८५९ की शाम को फाँसी दे दी गई।

१८५७ की क्रांति में रोटी और कमल का प्रतीकात्मक उपयोग हुआ। कमल का फूल क्रांति में शामिल होने का संकेत था और रोटी का मतलब था कि लंबी लड़ाई के लिए रसद तैयार रखना अति आवश्यक है।

१८५७ में भारत की आम जनता, सैनिक और देशी रियासतों के राजाओं तथा जमींदारों ने विदेशी शासन से मुक्ति पाने के लिए बहादुरी से संघर्ष किया इस कारण इसे १८५७ का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम माना जाता है। १८५७ की घटनाएँ, स्वतंत्रता संग्राम की प्रथम चिंगारी थी। इस संग्राम में सैनिकों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस क्रांति में अनेक

नाना साहेब पेशवा

क्रांतिकारियों, सैनिकों के साथ-साथ आम जनमानस ने भी उत्साह के साथ भाग लिया।

ऐसे ही एक देशभक्त आम आदमी अमरचंद बांठिया को इस प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का भामाशाह कहा जाता है, जो बीकानेर का निवासी था। उन्हें राजस्थान का मंगल पांडे भी कहा जाता है। उन्होंने विशेषरूप से ग्वालियर रियासत के खजाने का धन झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई को देकर स्वतंत्रता सेनानियों के लिए आर्थिक सहायता की। उन्हें राजस्थान का पहला शहीद भी माना जाता है और १८५७ की क्रांति में उनके योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता।

तात्या टोपे

मंगल पांडे आजादी के आंदोलन में शहीद होने वाले पहले सेनानी थे। उन्हें प्रथम स्वतंत्रता आंदोलन का जनक भी कहा जाता है। उनके आंदोलन ने ब्रिटिश सरकार सत्ता को हिला कर रख दिया था। बैरकपुर छावनी में २९ मार्च, १८५७ को मंगल पांडे नामक सैनिक ने चर्बी वाले कारतूस को भरने से इंकार कर दिया और उत्तेजित होकर अँग्रेज अधिकारियों की हत्या कर दी।

फलस्वरूप उसे बंदी बनाकर ८ अप्रैल, १८५७ को फाँसी दे दी गयी। इस प्रकार चर्बी लगे कारतूस १८५७ की क्रांति का तात्कालिक कारण बना। उल्लेखनीय है कि २९ मार्च १८५७ को बैरकपुर, कोलकाता के ठीक उत्तर दिशा में ३४वीं बंगाल नेटिव इन्फैंट्री की सिपाही मंगल पांडे ने अपने अफसरों पर हमला कर दिया। जब उनके साथियों को उन्हें रोकने का आदेश दिया गया, तो उन्होंने मना कर दिया। तभी मंगल पांडे ने अपने दो अधिकारियों लेफ्टिनेंट जनरल ह्यूसन और लेफ्टिनेंट बाग की हत्या कर दी थी।

१० मई, १८५७ को मेरठ छावनी की २०वीं नेटिव इन्फेंट्री में भी चर्बी वाले कारतूस का प्रयोग करने से मना कर सशस्त्र विद्रोह किया।

इसी तरह १८४२ में बुंदेलखंड में गोकशी के विरुद्ध भी एक विरोध प्रदर्शन हुआ था, जिसमें लोगों ने गायों के वध के विरुद्ध आवाज उठाई थी। यह विद्रोह १८५७ के विद्रोह से १५ वर्ष पहले हुआ था। बाद में चलकर १८५७ के विद्रोह में बुंदेलखंड के लोगों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

यहाँ के सिपाहियों ने अँग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष किया और कई स्वतंत्रता सेनानियों ने बुंदेलखंड में इस संग्राम का नेतृत्व किया, १८५७ के संघर्ष के दौरान ठाकुर जोधासिंह के नेतृत्व में बुंदेलखंड के क्रांतिकारियों ने मेजर मिडलटन के खोजी दल को चकमा देकर उत्तर प्रदेश के फतेहपुर तक मार्च किया।

बुंदेलखंड के सिपाही, जो ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी में भर्ती थे, ने भी विद्रोह में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उन्होंने अँग्रेजों के विरुद्ध हथियार उठाए और संघर्ष किया। बुंदेलखंड की जनता ने भी विरोध करने वालों का समर्थन किया। उन्होंने अँग्रेजों को इतना परेशान किया कि अँग्रेजों को बुंदेलखंड में विद्रोह दबाने में बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ा।

१८५७ के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में बुंदेलखंड की भूमिका महत्वपूर्ण थी। बुंदेलखंड के लोगों ने, चाहे वे सिपाही हों या सामान्य नागरिक, ने अँग्रेजों के विरुद्ध स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया। परिणाम स्वरूप ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन समाप्त हो गया

और भारत सीधे ब्रिटिश ताज के अधीन आ गया।

भारत के प्रशासन में भी बदलाव हुए, जैसे गवर्नर जनरल के पद को वायसराय से बदल दिया गया। १८१८ में अप्पा साहब भोंसले की पराजय के बाद मराठों का पराभव हो चुका था और सागर तथा दमोह क्षेत्र पर अँग्रेजों ने कब्जा कर लिया था।

१० मार्च, १८१८ को अँग्रेजों ने समस्त चौधरियों, कानूनगो, जमींदारों और इलाके की जनता के नाम बाकायदा घोषणा जारी करके बता दिया था कि अब से यहाँ अँग्रेजी राज स्थापित हो गया है। यही वह क्षेत्र था जिसे अँग्रेजों ने 'सागर और नर्मदा क्षेत्र' घोषित किया था तथा जिसमें जबलपुर, मंडला, सिवनी, बैतूल, होशंगाबाद, नरसिंहपुर, सागर और दमोह जिले आते थे। इसी क्षेत्र में वर्ष १८५७ की क्रांति के १५ वर्ष पहले वर्ष १८४२ में जो विद्रोह हुआ उसे ही 'बुन्देला विद्रोह' का नाम दिया गया है।

यद्यपि इसे बुन्देला विद्रोह कहा गया किन्तु इसमें क्षेत्र के ठाकुरों के अलावा गोंड आदिवासियों, लोधियों, कुर्मियों आदि ने भी सक्रिय भाग लिया। इस प्रकार १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम में सभी भारतीयों ने अँग्रेजों की अत्याचारी नीतियों से दुखी होकर मिलकर भाग लिया।

वीर सावरकर की पुस्तक ''१८५७ का स्वातंत्र्य समर'' को प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास के रूप में जाना जाता है। यह पुस्तक १८५७ के विद्रोह को एक राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के रूप में चित्रित करती है, जिसे इतिहासकारों ने अधिकांश सिपाही विद्रोह या एक सीमित विद्रोह कहा था। सावरकर ने इस पुस्तक में १८५७ के विद्रोह को एक व्यापक स्वतंत्रता संग्राम के रूप में प्रस्तुत किया है, जिसमें उन्होंने विभिन्न भारतीय समुदायों की भागीदारी और स्वतंत्रता के प्रति उनकी भावना को दर्शाया है।

सावरकर ने पुस्तक में राष्ट्रीय एकता के महत्व पर जोर दिया है और १८५७ के विद्रोह को एक ऐसा प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया है, जो सभी भारतीयों को एकजुट करता है। सावरकर की पुस्तक को भड़काऊ माना जाता था और इसे प्रकाशित होने से पहले ही ब्रिटिश भारत में प्रतिबंधित कर दिया गया था किंतु इस पुस्तक को क्रांतिकारी आँदोलन के लिए एक प्रेरणास्रोत माना जाता है और यह २०वीं सदी के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

बाबू कुँवर सिंह

रानी लक्ष्मीबाई

वीर सावरकर ने १९०७ में इस पुस्तक को लिखना प्रारंभ किया था और १९०९ में इसका पहला संस्करण प्रकाशित हुआ था। यह पुस्तक सावरकर के राष्ट्रवादी विचारों का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है और उन्होंने १८५७ के विद्रोह को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक महत्वपूर्ण भाग माना है।

सावरकर ने पुस्तक में १८५७ के विद्रोह को एक राष्ट्रीय और सामूहिक संघर्ष के रूप में प्रस्तुत किया है, जो अँग्रेजों के विरुद्ध एक एकीकृत विद्रोह था। १९४७ काल के सभी क्रांतिकारी सावरकर की पुस्तक '१८५७ का स्वातंत्र्य समर' को क्रांतिवीरों की गीता माना जाता था। इसी पुस्तक से प्रेरणा लेकर क्रांतिकारियों ने १९४७ में भारत को स्वतंत्र कराया। अत: हमें प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का महत्व समझते हुए सदा ही इसे स्मरण रखना चाहिए।

– यमुनानगर (हरियाणा)

छः अँगुल मुस्कान

राम प्यारे बाल कटवाने गया

सैलून वाला– बाल छोटे करवाने हैं?

राम प्यारे– बड़े हो सकते हैं क्या?

✻✻✻✻✻

लड़का– भैया! बस स्टॉप तक के कितने पैसे लोगे, सामान भी साथ में है?

रिक्शेवाला– जी, ३० रुपये, सामान का कोई पैसा नहीं लगेगा।

टकलू– आधी दूर हमें बिठा कर ले चलो। आधी दूर केवल सामान ले चलो, १५ रुपये ले लेना।

✻✻✻✻✻

सेठ (गुस्से से)– तुमने कभी उल्लू देखा है?

कर्मचारी (सिर झुकाते हुए)– नहीं सेठ जी, कभी नहीं।

सेठ– नीचे क्या देख रहे हो? मेरी तरफ देखो।

✻✻✻✻✻

मरीज– डॉक्टर साहब, ये आपने कौन–सी दवा लिख दी, किसी कैमिस्ट के पास नहीं मिली।

डॉक्टर ने पर्चा देखा और बोला– अरे गलती हो गई। दवा लिखना तो भूल ही गया। ये तो मेरे साइन है।

✻✻✻✻✻

एक दुकानदार चिल्ला–चिल्लाकर पैराशूट बेच रहा था– हवाई जहाज से कूदो बटन दबाओ और सुरक्षित जमीन पर पहुँचो।

कस्टमर– अगर पैराशूट नहीं खुला तो.....।

दुकानदार– तो पैसे वापस।

कस्टमर– किसे घरवालों को?

इस तरह बनाओ

अजगर

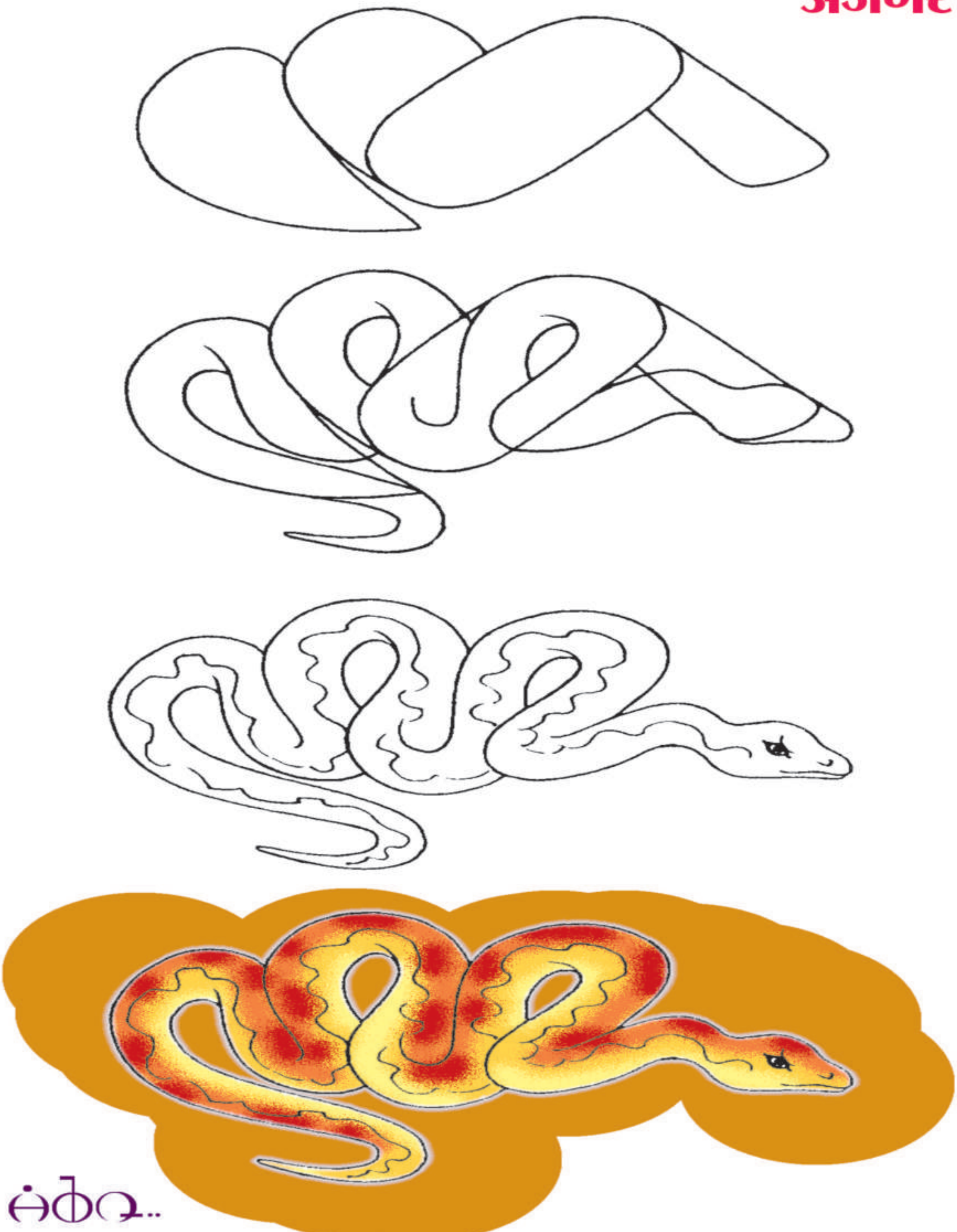

ऋचा..

मेरी खेल किट

– पूनम पाण्डे

चकमक सातवीं कक्षा में पढ़ता था। उसके विद्यालय में पढ़ाई के साथ–साथ सांस्कृतिक गतिविधियों तथा खेलकूद आदि पर भी खूब ध्यान दिया जाता था। चकमक भी अपने विद्यालय की हॉकी टीम का प्रमुख खिलाड़ी था। वह सचमुच बहुत अच्छा खेलता था। लेकिन उसमें कुछ बुरी आदतें भी थीं।

किसी को कभी भी कुछ भी झूठ बोलकर भ्रमित कर देता फिर उसके मजे लेता या शर्त लगाकर कमजोर बच्चों के खिलौने ले लेता और इतना ही नहीं वह मुफ्त में मजे करने का भी बड़ा शौकीन था चकमक। एक बार उसने भूकंप का डर दिखाकर एक सहपाठी को ऐसा भयग्रस्त कर दिया कि वे किसी भी आहट पर डरकर बैंच के नीचे छिप जाया करता।

कुछ दिनों बाद एक सहपाठी को बातों–बातों में मूर्ख बनाया कि मित्र की सहायता करने से चमत्कार हो जाते हैं और फिर उस भोले बालक से चकमक ने अपना खूब सारा गृहकार्य करवाया जब चकमक की बहन ने सारा रहस्य उजागर किया, तब चकमक की परिवार और विद्यालय में अच्छी–खासी फजीहत भी हुई और उसने सबके सामने आगे से कोई शरारत न करने की कसम खायी थी। पर शरारती चकमक जल्दी ही उसे भूल गया।

आज भी प्रार्थना स्थल से कक्षा की ओर जाते हुए उसने अपनी कक्षा की पंक्ति में रौनक को एक आवाज देकर कहा कि– ''रौनक! तू तो अब गया काम से, तेरे टेस्ट में मात्र दो अंक आये हैं। दस में से दो अंक का मतलब जानता है न तू?''

चकमक से इतना सुनना था कि रौनक की दुखी आँखों से टप–टप आँसुओं की धारा बह चली। वह उदास मन से करीब–करीब सुबकता हुआ, उमसते हुए दिल से कक्षा के भीतर प्रवेश कर गया। अध्यापिका ने टेस्ट की कॉपियाँ वितरित करनी प्रारंभ की। उन्होंने रौनक का रुआँसा जरा नाराज होकर उससे बोलीं– ''बेटे रौनक! आपको तो दस में से नौ अंक आये हैं फिर भी आप इतना रोते हो। बाकी छात्र भी अवसाद में आ जायेंगे।''

'हैं,,,हैं,,,' कहते हुए रौनक ने जब अपनी कॉपी के अंतिम पृष्ठ पर अपने अंक देखे तो वास्तव में ही दस में से नौ अंक मिले थे। अब रोते–रोते हँस रहे बेचारे सैनिक ही हालत ही अजीब–सी थी। उससे कुछ भी समझते–बूझते नहीं बन पा रहा था। मगर यह सब देखकर वरुण को बहुत बुरा लगा। उसे चकमक की यह आदत सचमुच खराब लगती थी। एक बार चकमक ने उसे भी इसी तरह का सदमा देकर चौंकाया था।

खैर! अब सब कापियाँ बँट गयीं थी और अध्यापिका ने नया पाठ पढ़ाना प्रारंभ कर दिया था। सभी छात्र–छात्राएँ बड़ी लगन से पाठ समझ ही रहे थे कि अचानक एक छात्र जिसका की आज ही विद्यालय में प्रवेश हुआ था। एकाएक अपने स्थान से खड़ा हुआ, अध्यापिका के पास आया और उनके चरण–स्पर्श करके पुन: अपनी बेंच पर बैठ गया।

अध्यापिका को यह काम बिलकुल अच्छा नहीं लगा। किन्तु बाकी सारे बच्चे जानते थे कि यह कार्य तो केवल आनंद लेने के लिए चकमक द्वारा उस नए और भोले छात्र से करवाया गया था।

चकमक ने कहा था कि– ''गौर से सुनो, यह हमारी कक्षा का नियम है।'' अत: वह नया छात्र फिर चरण स्पर्श करने आया तो अध्यापिका ने पुस्तक टेबल पर रखी फिर अपना चश्मा उतारा और वह कुछ कहने ही वाली थीं कि अगले कालांश की घण्टी बजी। घण्टी बजने के तुरन्त बाद ही विज्ञान के शिक्षक आ गए। अध्यापिका को जाना पड़ा।

वरुण बहुत ही क्रोध में भरा हुआ चकमक की

सब हरकतें देख रहा था। उसने खाने की छुट्टी के समय रौनक और उस नए छात्र के साथ शिक्षिका के पास चलकर सब किस्सा सुना दिया। उस नए छात्र की ऐसी मासूमियत और भोलापन देखकर शिक्षिका ने हँसते-हँसते चकमक को भी क्षमा कर दिया।

अब अंतिम कालांश चल रहा था कि खेल शिक्षक ने कुछ सूचना भेजी। इस सूचना को सुनकर चकमक चटपट उठकर खड़ा होने लगा क्योंकि उसे खेल कक्ष से हॉकी की नयी किट लेनी थी। खेल कक्ष में वह जैसे ही पहुँचा वहाँ पर वरुण पहले से ही उपस्थित था वरुण ने उससे कहा कि- ''उसके स्थान पर कोई और खिलाड़ी खेलने वाला है, इसलिए चकमक तू अपनी किट को भूल ही जा।''

चकमक जो कि बड़े ही जोश और उत्साह में भरा हुआ था, अचानक उदास हो गया वह इस बदलाव के बारे में कुछ कहता या फिर खेल शिक्षक से मिलने जाता कि घंटी टन-टन-टन कर बजी और विद्यालय की आज की छुट्टी हो गयी।

भारी कदमों से वह अपनी कक्षा में पहुँचा और बस्ता उठाकर घर को चल पड़ा।

आज पूरे रास्ते में उसने न कोई मस्ती की न किसी से बात। चुपचाप वह घर पहुँचा। जूते उताकर और बस्ता रखकर हाथ-पैर धोकर भोजन की प्रतीक्षा करने लगा। माँ ने थाली परोसी।

चकमक ने मौन रहकर भोजन ग्रहण किया। माँ ने उसकी चुप्पी पर इतना भी अधिक ध्यान नहीं

दिया। माँ को लगा कि शायद थका हुआ होगा। अपना गृहकार्य करके चकमक उद्यान में चला गया। आज उसका खेलकूद में रत्ती भर भी मन नहीं था।

वह माली काका के निकट चला गया। आज उसका मन अनमना सा था इसलिए अपनी आदत के एकदम विपरीत वह माली काका को परेशान नहीं करके उनकी सहायता करने लगा। उसने सारे पौधों को पानी दिया। माली काका की बिटिया को जो पाँचवीं कक्षा में उसी के विद्यालय में पढ़ती थी, उसकी गणित के प्रश्न हल करने में सहायता की। शाम ढलते ही चकमक चुपचाप घर वापस चला गया।

आज चकमक जल्दी ही सोने चला गया किन्तु पूरी रात ही वह ठीक से सो न सका। उसका मन गहरी उदासी से भर गया था। भला उसे टीम से क्यों निकाल दिया गया? कहीं रौनक या फिर उस नए छात्र ने कुछ चुगली तो नहीं कर दी होगी। आखिर क्या हो सकता है?

सुबह विद्यालय की प्रार्थना सभा के दौरान उसकी दोनों आँखें इधर से उधर यहाँ वहाँ भटककर खेल शिक्षक को खोज रही थीं। आज और अभी उसने उनसे यह प्रश्न करना था कि आखिर उसको टीम से बाहर किसने निकाला? क्यों?

प्रार्थना सभा के बाद वह कक्षा में पहुँचा तो जो देखा उससे एकदम ही सकपका गया। उसके बस्ते के ऊपर एक हॉकी किट रखी थी। चकमक ने उत्सुकता में भरकर उसे हाथ में लिया कि तभी एक चिट गिरी। चिट में उसी का नाम चकमक लिखा था। अपना नाम देखकर वह चकराया कि तभी पीछे से वरुण ने उसकी पीठ पर थपकी दी और बताया कि– ''मैंने तो कल एक छोटा–सा मजाक किया था। भला चकमक को भी कभी टीम से हटाया जा सकता है। यह किट तुम्हारा ही है।''

यह सुना तो चकमक ने उस किट को छाती से चिपका लिया उसकी आँखों से अश्रु की धारा बह निकली। वह सुबक रहा था कि उसकी कक्षा से होकर गुजरती शिक्षिका उसके पास आयी चकमक ने चट आँसू पोंछ लिए।

किन्तु, शिक्षिका उसकी भूरि–भूरि प्रशंसा करती हुई बोली कि– आज सुबह की सैर के समय माली काका ने चकमक की बहुत तारीफ की थी। चकमक ने उनका आभार व्यक्त किया और अपनी सीट पर बैठ गया। अब कक्षाध्यापिका आयीं और रजिस्टर में सबकी उपस्थिति लेने लगीं।

चकमक मन तो इस समय किसी और ही दुनिया में था। ऐसी दुनिया जहाँ वह एक अच्छा छात्र बनने वाला था। ऐसा छात्र जो किसी को तंग न करे। किसी का मजाक न उड़ाये और किसी से मुफ्त में अपने मतलब का कोई काम न कराये।

अपने नाम की पुकार होते ही वह वर्तमान में लौटा। आज ही नहीं अभी इसी पल से इसी दुनिया में एक सच्चा और अच्छा चकमक बनने के लिए तैयार हो चुका था।

– अजमेर
(राजस्थान)

कुण्डली

खेल

खेल है अद्भुत औषधि, मिले सुखद परिणाम।
तन सुपुष्ट मन खिल उठे, होय सहज व्यायाम।
होय सहज व्यायाम, बने अनुशासित जीवन।
बल, साहस उत्साह जगे, आनंदित क्षण–क्षण।
मित्र बनाए नए, कराता खेल मेल है।
हार जीत अभ्यास कराता, सदा खेल है।

कालू

– करुणा प्रजापति

व्यस्त दिनचर्या में से कुछ आनंद के पल चुराकर 'हेमकुण्ड साहेब' (उत्तराखंड) जाना हुआ। गोविन्द घाट से पाँच किलोमीटर के रास्ते तक टैक्सी से आसानी से पहुँच गए।

अब आगे की खड़ी चढ़ाई को पार करने के लिए हमारे दल ने घोड़ा या खच्चर करने का निर्णय किया।

सभी को एक–एक करके घोड़े पर बैठाकर मैं सबसे अंत में एक हट्टे–कट्टे तगड़े काले घोड़े पर बैठी।

जैसे ही मैं घोड़े पर सवार हुई घोड़ा उल्टी दिशा में चल दिया, मैं चढ़ने की बजाय उतरने लगी, मैंने घोड़े वाले को आवाज लगाई, वह दौड़कर आया और घोड़े की लगाम पकड़कर उसे सही दिशा की ओर ले गया। आगे मेरी बच्चियों का सफेद घोड़ा था जिसके साथ उस घोड़े वाले ने मेरे घोड़े की लगाम भी बाँध दी और दोनों घोड़ों को एक साथ लेकर चलने लगा।

जैसे ही मेरे घोड़े ने चलना प्रारम्भ किया, ऐसा लगा मानो वह चल कम रहा है और उछल अधिक रहा है। घोड़े पर बैठने का यह मेरे जीवन का पहला अनुभव था, इसलिए मुझे लगा कि घोड़े ऐसे ही चलते होंगे। मैं अधिक सावधान होकर बैठी रही।

शुरुआत के दो मिनट में ही मैं समझ गई कि मेरा घोड़ा कुछ चंचल है। क्योंकि कभी वह चलते–चलते रुक जाता, कभी पहाड़ पर दौड़कर आगे निकल जाता कभी खाई की ओर हरियाली देखकर घास खाने निकल जाता, तगड़ा होने के कारण दो–तीन बार बँधी हुई लगाम भी छुड़ाकर बेलगाम दौड़ने लगता।

बेचारा घोड़े वाला भी १३–१४ वर्ष का बालक ही था। वह मेरे घोड़े के कारण पीछे–पीछे दौड़ लगा रहा था। 'ऐ कालू! रुक, ऐ नीली! रुक', 'कालू! इधर आ, कालू! उधर चल'।

''कालू कौन है?'' मैंने पूछा।

''आपके काले घोड़े का नाम है।''

''अच्छा।''

''लेकिन मुझे लगता है यह घोड़ा बाकि सबसे अलग है, देखो! सबके घोड़े चुपचाप सीधे–सीधे चले जा रहे हैं और यह तो सीधा चलता ही नहीं।''

''हाँ दीदी! बाकी सभी बड़े हैं और यह सबसे छोटा है इसलिए नटखट है।''

अब मुझे सारा माजरा समझ में आ गया, यह बच्चा है इसलिए मेरे बच्चों के घोड़े के साथ चलना चाहता है क्योंकि बच्चे–बच्चों के साथ ही खेलना और रहना पसंद करते हैं।

छोटा है इसलिए जोश और जूनून से भरपूर है, धैर्य की भी कमी है, भूख लगती है तो जहाँ घास दिखती है वहीं खाने के लिए चलने लगता है।

मैंने कालू को गौर से देखा, काला चमकीला रंग, रेशमी बाल, मासूम-सी गहरी काली आँखें, शरीर से ताकतवर और दिमाग से बच्चा, मतवाली चाल चलता है, यदि आप थोड़ा-सा भी असंतुलित होते हो तो कालू अपनी अगली चाल से आपको पुन: व्यवस्थित कर देता है।

मैंने कालू के सिर पर प्यार से हाथ फेरा, ममता का स्पर्श पाकर उसका मुँह झुक सा गया।

अब कालू और मेरे बीच किसी लगाम की आवश्यकता नहीं रही। कालू को जब घास खाना होती वह रुककर खा लेता और हम आगे बढ़ जाते।

सँकरी जगह पर कालू आगे जाने लगता तो मैं बोलती- ''कालू! रुक जाओ।'' कालू वहीं रुक जाता, मैं बोलती- ''कालू आगे चलो।'' कालू चलने लगता। कालू तेज दौड़ने लगता तो मैं बोलती- ''कालू! धीरे-धीरे'',कालू धीरे-धीरे चलने लगता।

दो से ढाई घंटे की यात्रा में कालू और मेरे बीच आत्मीयता का पवित्र रिश्ता बन चुका था।

एक समय तो ऐसा आया जब हमारे साथियों ने देखा कि मेरा घोड़ा कुछ अधिक ही मतवाला है तो उन्होंने मुझे कहा कि घोड़ा बदल लेते हैं, लेकिन मैं अपने कालू को नहीं छोड़ना चाहती थी।

उस यात्रा में मैं, मेरा कालू और मनोरम घाटियाँ। अद्‌भुत आनंद। उस क्षण को शब्दों में नहीं बताया जा सकता। लेकिन कालू का और मेरा साथ बस कुछ समय का ही था, हमारा गन्तव्य आ गया और मुझे कालू से उतरना पड़ा।

उतारने के बाद भी कालू बहुत दूर तक हमारे पीछे-पीछे आता रहा। आखिर मैं पलटी कालू के सिर पर प्यार से हाथ फेरा और कहा- ''कालू! अब अपने घर जाओ।'' और नम आँखों से उससे विदा ली।

मेरे देखते ही देखते कालू नीचे उतर कर आँखों से ओझल हो गया।

- इन्दौर (म. प्र.)

कविता

बादल

- सुकीर्ति भटनागर

काले और कजरारे बादल,
उमड़-घुमड़ कर छाते हैं।
धुआँधार से प्यारे बादल,
कहाँ-कहाँ से आते हैं।।

जादूगर से लगते बादल,
सपन सलोने बुनते हैं।
आसमान की धुली सड़क से,
फूल चंपई चुनते हैं।।

शाला खुली हैं उनकी जैसे,
दौड़े जाते सारे माँ।
ठंडी भीनी हवा हैं लाते,
बारिश के हरकारे माँ।।

आ बरसें आँगन में मेरे,
जी भर खूब नहाऊँ माँ।
कागज की नौका अलबेली,
पानी में तैराऊँ माँ।।

जो कटते ये वृक्ष न बेटा,
रिमझिम बारिश हो जाती।
घाम-ताप से बोझिल तन को,
बूँदों से सहला जाती।।

- पटियाला (पंजाब)

कर्ण व शल्य का वध

– मोहनलाल जोशी

महाभारत युद्ध में सोलहवें तथा सत्रहवें दिन कर्ण सेनापति रहता है। वह नकुल और सहदेव को परास्त करता है। परन्तु कर्ण ने माता कुन्ती को वचन दिया था। कर्ण ने कहा था– ''मैं अर्जुन के अलावा किसी पांडव को नहीं मारूँगा।'' उसने नकुल और सहदेव को छोड़ दिया। कर्ण ने भीम और युधिष्ठिर को भी हराया था। परन्तु उन्हें भी नहीं मारा।

सत्रहवाँ दिन चल रहा था। कर्ण और अर्जुन आमने–सामने लड़ रहे थे। कर्ण का रथ मिट्टी में फँस गया। कर्ण रथ से नीचे उतरा। वह पहिये को पकड़कर रथ निकालने लगा। तभी कृष्ण ने अर्जुन से कहा– ''कर्ण पर बाण चलाओ। इसका अभी ही वध हो

सकता है।'' अर्जुन ने कर्ण का वध कर दिया। बाद में शल्य कौरवों के सेनापति बने। शल्य को महाराज युधिष्ठिर ने युद्ध में मार गिराया।

पांडवों की विजय

कौरवों के सभी सेनापति मारे गए। अठारहवें दिन भीम ने दुर्योधन के सभी भाइयों को मार दिया। दुर्योधन पानी के अन्दर छिप गया। फिर पांडवों ने सरोवर के पास जाकर दुर्योधन को ललकारा। दुर्योधन पानी से बाहर आ गया।

भीम और दुर्योधन में गदा युद्ध हुआ। गांधारी ने दुर्योधन का शरीर वज्र का बना दिया था। वह भीम से परास्त नहीं हो रहा था। फिर भीम को कृष्ण ने समझाया– ''दुर्योधन की जंघा पर वार करो।''

भीम ने दुर्योधन की जांघो को तोड़ दिया। वह तड़फने लगा। दुर्योधन की मृत्यु हो गई। मरते समय उसने अश्वत्थामा को सेनापति बनाया। रात हो गई थी। कौरव हार गये थे। पांडवों की जीत हो गई। रात में पाण्डव अपने शिविर में सोने चले गए।

– बाड़मेर (राजस्थान)

क्रिकेट का चमका सितारा

– रजनीकांत शुक्ल

उनका नाम संदीप सूर्यवंशी है। वे बिहार राज्य के समस्तीपुर जिले के एक मध्यमवर्गीय किसान है। उन्हें अपने समय में क्रिकेट खेलने का जुनून था। उन्होंने बहुत प्रयत्न किया किन्तु वे राज्य से आगे न जा सके। क्योंकि बीसीसीआई की मान्यता बिहार राज्य को नहीं थी। उनके मन में कसक रह गई। काश देश के लिए खेल पाते। प्रसिद्ध कवि गोपालदास 'नीरज' की कविता की पंक्ति की तरह–चाह तो निकल सकी न, पर उमर निकल गई।

लेकिन जो सपना कभी उन्होंने अपने लिए देखा था उसे पूरा करने के लिए धैर्य रखा और जब उनका दूसरा बेटा वैभव चार वर्ष का हुआ तो उन्होंने उसके हाथ में लकड़ी का बल्ला पकड़ा दिया। इस आशा से कि जो हमसे भी हो न सका वह तुम करके दिखलाओगे। बिहार राज्य में समस्तीपुर जिले के ताजपुर में २७ मार्च २०११ में जन्में वैभव को उनके पिता संदीप ने अपने सपने की तरह पाला।

अच्छा मैदान अच्छी कोचिंग और सीमित संसाधनों के चलते शुरुआती दौर के पाँच वर्ष तक उन्होंने स्वयं वैभव को प्रशिक्षण दिया। अपने घर के पीछे छोटा–सा मैदान बनाकर उन्होंने वहीं सुबह आठ बजे से लेकर शाम चार से पाँच बजे तक लगातार अभ्यास–अभ्यास और अभ्यास किया। वैभव को अच्छा प्रशिक्षण और संसाधन देने के लिए उन्होंने अपनी जमीन बेच दी। नौ वर्ष के होने पर उन्होंने वैभव को समस्तीपुर की एक क्रिकेट अकादमी में भर्ती करा दिया। बाद में वहाँ से लगभग सौ किलोमीटर दूर पटना में सप्ताह में हर दूसरे दिन अच्छे प्रशिक्षण के लिए वे जाने लगे। जिसके लिए उनकी माँ सुबह चार बजे उठकर वैभव और उनके साथी गेंदबाजों के लिए खाना बनाती थीं। इस लगातार कठिन प्रशिक्षण का परिणाम यह हुआ कि वैभव स्थानीय टूर्नामेंटों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने लगे। उनके शानदार प्रदर्शनों के वीडियो वायरल होने लगे। जिन पर चयनकर्ताओं की नजर पड़ी और इसी अच्छे प्रदर्शन की बदौलत वैभव को बारह वर्ष की आयु में वीनू मांकड ट्रॉफी में अंडर–१९ टीम में बिहार राज्य की ओर से खेलने का अवसर मिल गया।

२०२३ में उन्हें अंडर–१९ भारत बी टीम की ओर से एक शृंखला खेलने का अवसर मिला। जिसकी छः पारियों में उन्होंने दो अर्धशतकों सहित एक सौ सतत्तर रन बनाए। वैभव ने जनवरी २०२४ में बिहार की ओर से मुंबई के विरुद्ध प्रथम श्रेणी क्रिकेट में भाग लिया था। उस समय उनकी आयु १२ वर्ष २८४ दिन हुई थी। इस तरह वे बिहार के दूसरे और भारत के चौथे सबसे कम उम्र में प्रथम श्रेणी क्रिकेट खेलने वाले खिलाड़ी बने।

सितम्बर २०२४ में उन्हें अंडर–१९ भारत बी टीम की ओर से ऑस्ट्रेलिया के विरुद्ध खेलने का अवसर मिला। जिसमें उन्होंने ५८ गेंदों में १०४ रन बनाए जो इस आयु वर्ग में किसी भी भारतीय द्वारा बनाया गया तब तक का दूसरा सबसे तेज शतक था।

२०२४ में ही एसीसी अंडर–१९ एशिया कप में वैभव ने यूएई के विरुद्ध ४६ गेंदों में ७६ रन बनाए और सेमी फाइनल में श्रीलंका के विरुद्ध ३६ गेंदों में ६७ रन बना डाले।

आईपीएल की बड़ी नीलामी से पहले जब राजस्थान रॉयल के एक अधिकारी ने वैभव के लिए दस करोड़ रुपए अलग रखने को कहा तो टीम प्रबंधन समिति के लोग हैरत में पड़ गए। मगर जब ट्रायल हुआ तो वैभव के सामने एक ओवर में सत्रह रन बनाने की चुनौती रखी गई। किन्तु वैभव ने पहली तीन गेदों में ही तीन छक्के लगाकर उन्हें चकित कर दिया। पूरे ट्रायल में वैभव ने आठ छक्के और चार चौके लगाए थे। उन्हें राजस्थान रॉयल्स की टीम तीस लाख की शुरुआती कीमत के बाद नीलामी बोली में एक करोड़ दस लाख में खरीद लिया।

वे अक्सर अपनी टीम के बड़े खिलाड़ियों से पूछते कि कभी ऐसा हुआ है कि अपने पहले ही मैच में किसी ने जाते ही पहली गेंद पर छक्का मारा हो, और अब अप्रैल २०२५ में उन्हें लखनऊ की टीम के विरुद्ध अपना पहला मैच खेलने का अवसर मिला तो उन्होंने अनुभवी गेंदबाज शार्दूल ठाकुर की फेंकी गई पहली ही गेंद छक्के के लिए रवाना किया।

चौदह वर्ष के प्रतिभाशाली क्रिकेटर वैभव सूर्यवंशी वर्ष २०२५ में आईपीएल इतिहास में सबसे कम आयु के और सबसे तेज शतक बनाने वाले भारतीय खिलाड़ी बन गए। रणजी क्रिकेट में आने वाले दूसरे कम उम्र के खिलाड़ी टी २० और लिस्ट ए क्रिकेट खेलने वाले सबसे कम आयु के भारतीय खिलाड़ी भी हैं। इसके नाम अनेक उल्लेखनीय प्रदर्शन दर्ज हैं। जिनमें अंडर–१९ टेस्ट में सबसे तेज शतक ५८ गेदों में और रणधीर वर्मा टूर्नामेंट में तिहरा शतक ३३२ रन की पारी शामिल हैं। उनके इस उल्लेखनीय प्रदर्शन और कम आयु में असाधारण उपलब्धियों को लेकर बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने उन्हें दस लाख रुपए का नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

इन सभी उपलब्धियों को देखकर महिला बाल विकास मंत्रालय की चयन समिति ने इनका नाम बच्चों को दिए जाने वाले देश के सबसे बड़े पुरस्कार प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार के लिए चुन लिया। वीर बाल दिवस २६ दिसम्बर २०२५ को देश के अन्य चुने गए बच्चों के साथ वैभव को भी उनके माता–पिता के साथ राजधानी दिल्ली आमंत्रित किया गया। जहाँ राष्ट्रपति भवन में देश की राष्ट्रपति माननीय द्रौपदी मुर्मू द्वारा उन्हें यह राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया। देश के प्रधानमंत्री जी ने भी उन्हें **'खेलोगे तो खिलोगे'** का मंत्र देकर प्रोत्साहित किया।

२२ फरवरी २०२६ को बिहार के तत्कालीन मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने अपने आवास पर आमंत्रित कर अंडर–१९ विश्वकप में उनके शानदार ऐतिहासिक प्रदर्शन के लिए उन्हें पचास लाख रुपए का चेक देकर सम्मानित किया था।

ऐसा ही हुआ। अपने दूसरे सीजन टाटा आईपीएल में अपने धमाकेदार प्रदर्शन से उन्होंने वर्ष २०१२ के क्रिस गेल के एक आईपीएल सीजन में सर्वाधिक ५९ छक्कों के बने रिकार्ड को तोड़कर ७२ छक्के लगाकर विश्व रिकार्ड बना दिया। साथ ही

१२९ चौके बनाकर उन्होंने बटलर के १२८ चौकों के रिकार्ड को तोड़कर नया कीर्तिमान अपने नाम कर लिया। उन्होंने एक सीजन में सर्वाधिक सात सौ से अधिक रन बनाकर आरेंज कैप पर भी कब्जा जमाया। यही नहीं सबसे कम ४४० गेंदों में सबसे तेज एक हजार रन का रिकार्ड भी उन्होंने अपने नाम कर लिया। वैभव सूर्यवंशी भारतीय क्रिकेट के आकाश में चमक रहे ऐसे सूर्य हैं जिन्होंने अपने चमकदार प्रदर्शन से सारी दुनिया के खेल प्रेमियों का ध्यान अपनी ओर खींचा है।

नन्हें मित्रो!

लगी रहे जो लगन निरन्तर पा जाओगे
चलते रहे अनवरत मंजिल पा जाओगे
मेहनत में जो बहा पसीना मैदानों में
ऐसे तुम भी आसमान पर छा जाओगे।

– नई दिल्ली

कविता

चलो, चलें चंदा के घर

– ओम उपाध्याय, इन्दौर (म. प्र.)

बच्चो, सब हो जाओ तैयार।
रॉकेट पर हो जाओ सवार।
हम सब चाँद की सैर करेंगे,
क्या है चंदा पर देखेंगे?

चंदा मामा दिखते गोल।
क्या वे सच मुच गोल मटोल?
सूत कातती बुढ़िया देखें,
कबसे कात रही है पूछें।।

देखें चंदा घटना बढ़ना।
पूछें क्यों होती ये घटना?
परिक्रमा धरती की करते,
उनके रिश्ते में क्या लगते?

मन के सारे प्रश्न रखेंगे,
मामा से उत्तर पूछेंगे।
कुछ दिन जाकर मौज करेंगे,
और धरा पर फिर लौटेंगे।।

लोमड़ का प्रायश्चित

– डॉ. के. रानी

चुन्नू कछुआ बड़ी मस्त चाल में समुद्र तट पर टहलता हुआ बहुत निकल आया था। उसी तट पर कई छोटे-छोटे कछुए भी पानी की ओर बढ़ रहे थे। समुद्र से कुछ दूरी पर टिप्सी मादा मगरमच्छ अंडे देने के लिए गड्ढे बना रही थी।

यह वह अवसर होता है जब मादा मगरमच्छ अंडे देने के दौरान किसी भी अन्य जंतु पर हमला नहीं करती बल्कि उनकी सहायता करती है। इस अवसर का लाभ उठाते हुए छोटे कछुए बहुत निश्चिंत होकर उसके पास से गुजर रहे थे। आनंद लेने के लिए टिप्सी कभी किसी कछुए के बच्चे को मुँह में उठा लेती और फिर उसे पानी तक छोड़ भी आती। चुन्नू को यह सब देखकर बहुत अच्छा लग रहा था।

उसे इस समय अपना बचपन याद आ रहा था जब एक बार मादा मगरमच्छ ने उसे इसी तरह से उठाकर मुँह में रख किया था। तब वह बहुत डर गया था लेकिन कुछ देर बाद मगरमच्छ ने उसे सकुशल पानी में छोड़ दिया था।

चुन्नू बहुत देर तक वहीं रेत पर टहलता रहा। तभी उसकी मुलाकात मीकू खरगोश से हो गई।

''कैसे हो मीकू ?''

''अच्छा हूँ। क्या बात है आज पानी छोड़कर तुम रेत पर टहल रहे हो ?''

''बहुत दिनों से इस ओर नहीं आया था। सोचा आज रेत में थोड़ा चहलकदमी कर लूँ।''

''यह तो तुम बहुत अच्छा काम कर रहे हो काका।''

''तुम बताओ इस समय समुद्र किनारे तुम क्या कर रहे हो?''

''मैं अपने मित्र बीरू भालू से मिलने गया था। अभी उससे मिलकर आ रहा हूँ।'' मीकू बोला। वे दोनों थोड़ी देर बात करते रहे। जैसे ही वह चलने को हुआ उसे कुछ याद आया। उसने मुड़कर चुन्नू से कहा– ''काका! यहाँ से आगे न जाओ तो अच्छा है। तुम समुद्र से बहुत दूर निकल आए हो।''

''ऐसा क्या हो गया?''

''आगे कुछ दूरी पर चमकू लोमड़ एक पेड़ के नीचे बैठकर सुस्ता रहा है। मुझे लगता है वह इधर ही आ रहा है। उसका क्या भरोसा? आपको अकेला देखकर हमला न कर दे।''

''तुम ठीक कह रहे हो मीकू! मुझे सच में अकेले इतनी दूर नहीं आना चाहिए था।''

''मैं तुम्हें पानी तक छोड़ दूँ काका?''

''धन्यवाद बेटा! मैं चला जाऊँगा।'' और मीकू के कहे अनुसार वह वहीं से वापस लौट गया। मीकू भी अपने रास्ते चला गया। उसकी बात सच निकली। चमकू लोमड़ इधर ही आ रहा था। रेत पर अकेले चलते हुए कछुए को देखकर उसके मुँह में पानी आ गया। वह बड़ी तेजी से उसकी ओर बढ़ा और पास आकर बोला– ''काका! अपने जीवन के आखिरी दिन गिन लो।''

''क्या हो गया बेटा? कोई भूचाल आने वाला है।'' चुन्नू ने पूछा।

''वह तो मैं नहीं जानता पर तुम्हारे जीवन में अवश्य भूचाल आने वाला है। आज मुझे कछुए का स्वादिष्ट माँस खाने को मिलेगा।'' चमकू ने कहा।

''अब तुम मुझे मारना चाहते हो तो मैं क्या कर सकता हूँ?'' चुन्नू आराम से बोला। उसे देखकर चमकू को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह बोला– ''तुम्हें मरने से डर नहीं लगता?''

''मौत से कौन नहीं डरता? मुझे भी डर लगता है लेकिन आज का दिन छोड़कर। तभी तो मैं अकेला इतनी दूर चला आया।''

''आज के दिन ऐसी क्या विशेष बात है काका? मैं भी तो जानूँ।''

''मैं कुछ कहूँगा तो तुम्हें विश्वास नहीं होगा। अच्छा हो तुम अपनी आँखों से यह सब देखकर विश्वास कर लो।'' इतना कहकर चुन्नू कछुआ चमकू लोमड़ को उस तरफ ले गया जहाँ पर टिप्सी मादा मगरमच्छ अंडे देने के लिए रेत में गड्ढा बना रही थी। उसके पास से छोटे–छोटे कछुए गुजर रहे थे और वह उन्हें नुकसान पहुँचाने की बजाय बड़े प्यार से देख रही थी।

''तुम इस मादा मगरमच्छ को देख रहे हो?''

''हाँ देख रहा हूँ। यह तो बड़ा विचित्र व्यवहार दिखा रही है। अपना हिंसक व्यवहार छोड़कर ये तुम्हारी प्रजाति के छोटे कछुओं को कितने आराम से जाने दे रही है।''

''यह तो कुछ भी नहीं है। अभी देखना वह कुछ बच्चों को स्वयं पानी तक छोड़ने भी जाएगी।'' चुन्नू कछुआ बोला। वही हुआ जैसा चुन्नू ने कहा था। टिप्सी ने मजाक में कुछ छोटे कछुओं को मुँह में उठाया और फिर उन्हें स्वयं पानी तक पहुँचाने जाने लगी। चमकू लोमड़ को अपनी आँख पर विश्वास नहीं हो रहा था।

''इस टिप्सी को आज क्या हो गया?''

''कुछ नहीं। आज वह अपने सारे बुरे कर्मों का प्रायश्चित कर रही है।'' चुन्नू ने बताया।

''आज के दिन प्रायश्चित करने से क्या कुछ विशेष लाभ होता है?''

''हाँ! वर्षों से यही प्रथा चली आ रही है। आज के दिन वन के प्राणी कछुओं की सेवा करते हैं। इससे उनका प्रायश्चित भी होता है तथा आज तक उन्होंने जितने भी पाप किए होते हैं उनका नाश हो जाता है। अब तुम्हारी इच्छा है चाहो तो मुझे मार सकते हो।''

''अरे! यह बात मुझे पता ही नहीं थी।''

''तुम्हें कैसे पता होती? इसे केवल पानी में रहने वाले जीवन जानते हैं कि आज का दिन कछुओं की सेवा का दिन है।''

''अब समझ में आया। इसी कारण से तुम आनंद से आज रेत में टहल रहे हो।''

''तुम ठीक कह रहे हो। आज के दिन कोई भी कछुओं को तंग नहीं करता।''

''मुझसे गलती हो गई। मुझे क्षमा कर दो काका! आपने मुझे बहुत बड़ा पाप करने से बचा लिया है।'' ''यह तो मेरा कर्त्तव्य था बेटा!''

''आप बताएँ मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?''

''ऐसा कुछ नहीं है। तुमने मेरे प्राण बचाए हैं इतना ही बहुत है।''

''ऐसा कहकर मुझे लज्जित मत करो। आपने मुझे बहुत बड़ा अनिष्ट करने से बचाया है।''

''तुम कुछ करना चाहते हो तो मुझे सामने समुद्र में छोड़ दो।'' चुन्नू कछुआ बोला।

चमकू लोमड़ ने चुन्नू कछुए को अपनी पीठ पर लादा और उसे समुद्र तक छोड़ आया।

''धन्यवाद बेटा!''

''यह तो मुझे कहना चाहिए था। आपने मुझे अपने पापों का प्रायश्चित करने का अवसर दिया।'' इतना कहकर चमकू लोमड़ प्रसन्नता से वन की ओर चला गया और चुन्नू पानी में। आज दोनों बहुत प्रसन्न थे। चुन्नू ने बुद्धिमानी से अपनी जान बचा ली थी।

– चुक्खूवाला (उत्तराखंड)

लघुकथा

पुरस्कार

– मीरा जैन

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर झंडा वंदन के पश्चात शाला में तात्कालिक चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गई विषय था– 'देशभक्ति पर आधारित चित्र बनाइए' सभी विद्यार्थियों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया इस दौरान शिक्षकगण घूम–घूम कर बच्चों द्वारा बनाये जा रहे चित्रों का निरीक्षण भी कर रहे थे। अंत में वैभवी के समीप से गुजरे तो उसे लगभग डाँटते हुए लहजे में कहा– ''वैभवी! तुमने ये क्या किया, देशभक्ति पर आधारित चित्र बनाने को कहा गया था और तुमने रोती हुई युवती का चित्र बना दिया। ऐसे चित्र को हम प्रतियोगिता में बिलकुल शामिल नहीं कर सकते हैं इसे तुम अपने घर ले जा सकती हो।''

समय समाप्ति के पश्चात वैभवी ने अपने द्वारा बनाए गए चित्र को यह कहते हुए जमा कर दिया– ''सर! आप भले ही मुझे पुरस्कार मत दीजिए किन्तु मेरे चित्र को शामिल तो कर लीजिए।''

अगले दिन शाला में जब परिणाम घोषित किए गए तो वैभवी के द्वारा बनाए गए चित्र को ही प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ कारण मात्र इतना था कि चित्र के नीचे एक वाक्य लिखा था– ''पापा! मुझे भी सेना में जाने दीजिए।''

– उज्जैन (म. प्र.)

सांस्कृतिक पहेलियाँ

(१)
था बलिष्ठ सुंदर शरीर, मूँछें उन पर जँचती थीं।
थी पिस्तौल संगिनी उनकी, साथ सदा रहती थी।
जब तक तन में प्राण रहे, अँग्रेज नहीं छू पाये
अपनी ही गोली खाकर वे अमर शहीद कहाये।।

(२)
अँग्रेजों के पापों से थी, भारत भू थर्राई
कूद पड़े प्रति उत्तर देने, वे तीनों ही भाई।
पूना के थे रहने वाले, अब ना देर लगाओ
तीनों ही फाँसी पर झूले, उनके नाम बताओ।।

(३)
अँग्रेजों ने कर दिया, भारत को आजाद
देश विभाजन का किया, मगर घोर अपराध।
वह तारीख बताओ जिस दिन देश बँट गया
भारत माँ का दायाँ–बायाँ हाथ कट गया।।

(४)
लाल–बाल और पाल ने, किया जाग्रत देश
स्वतंत्रता प्यारी हमें, फैलाया संदेश।
महाराष्ट्र–पंजाब और थे बंगभूमि में जन्मे
पूरे नाम बताये जो भी, बुद्धिमान है तुममें।।

(५)
अंडमान की काल कोठरी, उन्हें बनी सुखदाई
दो जन्मों की कैद भी उन्हें किंचित डरा न पाई।
हिन्दू जायें सेना में और सीखें शस्त्र चलाना
किसका था उद्घोष, जरा तुम उनका नाम बताना।।

(६)
मुसलमान थे वे मगर, आजादी के वीर
बिस्मिल जी के साथ में, रहे सदा रणधीर।
काकोरी के कांड में, उनका साथ निभाया
अँग्रेजों ने उनको भी फाँसी देकर मरवाया।।

(७)
नागदेश की थी रानी, अँग्रेजों से टकराई
आजादी आयी पर हमको, उनकी सुध न आयी।
भारत की जेलों में भी था लम्बा समय गुजारा
पद्म विभूषण दे शासन ने भी, थोड़ा कर्ज उतारा।।

(८)
जेल अदन की तोड़कर, वे भागे दिन रात
लेकिन फिर पकड़े गये, बिगड़ गयी सब बात।
क्रांतिकार्य हित सरकारी सेवा को मारी ठोकर
महाराष्ट्र में उनकी गाथा गाते अब भी घर–घर।।

(९)
जलियांवाला बाग में, हुए वीर बलिदान
गोली खाकर भी रखा, भारत का सम्मान।
उस पावन धरती की मिट्टी अपने शीश लगाओ
जिस दिन कांड हुआ था, उसकी तिथि हमें बतलाओ।।

(१०)
था स्वातन्त्र्य समर, जिसको अँग्रेज गदर कहते थे
क्राँतिकारियों के भय से, घर में घुसकर रहते थे।
मंगल पांडे ने कुछ पहले ही ये काम किया था
वह तारीख बताओ जिस दिन ये विस्फोट हुआ था।।

(११)
भगतसिंह सुखदेव राजगुरु, बने जहाँ बलिदानी
आज नहीं वह धरती भारत में–कैसी हैरानी।
दुष्ट पाक के पंजे से है उसको मुक्त कराना
लव ने जिसे बसाया था, तुम उसका नाम बताना।।

उत्तर– चंद्रशेखर आजाद। दामोदर, बालकृष्ण एवं वासुदेव चाफेकर। १४ अगस्त १९४७। लाला लाजपतराय, बाल गंगाधर तिलक, विपिन चंद्र पाल। विनायक दामोदर सावरकर। अशफाक उल्ला खाँ। रानी गाइडिन्ल्यू। वासुदेव बलवंत फड़के। १३.०४.१९१९। १० मई १८५७। लाहौर।

दुनिया उल्टी-पुल्टी

प्रस्तुति- संकेत

जुगनू की चमक

– पावनी पांडे

एक बार की बात है। एक गाँव से लगा हुआ एक हरा–भरा–सा जंगल था। उस जंगल में छोटे–छोटे टिम–टिम करते जुगनू थे और झींगुर जैसे कई प्राणी थे जो अपनी आवाज तथा अपनी प्रकाश से जानवरों की मार्ग सरल करते थे।

किन्तु जल्दी ही जंगल को बुरी दृष्टि लग गई। एक दूसरे जंगल से एक भयावह विषधर अँधेरे का साम्राज्य चलाने जंगल में आ गया। वह छोटे–बड़े जानवरों को निगल जाता। वहीं प्रकाश का दूत जुगनू जंगल में नन्हा प्रकाश बिखेरकर विषधर के कुप्रयास विफल कर रहा था।

वह चमकता रहता और पशु–पक्षियों को विषधर के हमलों से बचाता। यह देखकर विषधर आग बबूला हो गया। वह जुगनू को मारने की लिए भागा, लेकिन जुगनू बार–बार भागकर पेड़ पर चढ़ जाता।

विषधर मन मसोस कर रह जाता। तभी काँटेदार बेर की झाड़ी ने हवा की सहायता से लहराकर अपने नुकीले कंटकों से विषधर पर हमला कर दिया। जब वह विषधर दर्द से कराहने लगा तब जुगनू, झींगुर, पंछी आदि सभी ने उससे जोर–जोर से कहा– ''अँधेरा तुम्हारी समस्या है, जुगनू की नहीं। जुगनू अपने प्रकाश से जंगल को प्रकाशित करता रहेगा, चाहे तुम इसे पसंद करो या नहीं।''

हवा ने फुसफुसाकर कहा– ''विषधर ईर्ष्या और नफरत ही तुम्हारी असली कमजोरी है, न कि जुगनू की रोशनी।'' यह सुनकर अँधेरे का सारथी विषधर चुपचाप वहाँ से चला गया। एक बार फिर अच्छाई की विजय हो गई।

– अजमेर
(राजस्थान)

लाल बुझक्कड़ काका के कारनामें

-देवांशु वत्स

पुस्तक परिचय

चन्द्रलोक की थुलथुल परी
मूल्य– २२५/–

डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय' समकालीन बालसाहित्यकारों में एक सुप्रतिष्ठित नाम है। बालसाहित्य में नवीन प्रयोगधर्मिता और गवेषणा के लिए विख्यात श्री नागेश जी ने इस बाल कहानी संग्रह में आपके लिए बारह बाल कहानियों का सुंदर बहुरंगी पुष्पगुच्छ सजाया है।

प्रकाशक– न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन, सी–५१५ बुद्ध नगर, इन्द्रपुरी नई दिल्ली–११०००२

बालिकाओं की रोचक कहानियाँ
मूल्य– १६०/–

यह डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय' की कुशल संपादन कला का उत्तम उदाहरण है। प्रस्तुत बालकहानियाँ बालिका पात्रों को केन्द्रित कर देश के अत्यन्त ख्यातनाम १५ बाल कहानीकारों की बाल कहानियों का संग्रह है।

प्रकाशक– लवकुछ प्रकाशन, ५२५/६२४, जल निगम कॉलोनी के पास, महानगर, लखनऊ– (उ. प्र.)

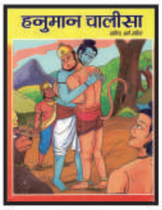

हनुमान चालीसा
मूल्य– १५०/–

श्री. संकेत गोस्वामी एक कुशल चित्रकार एवं नवाचारी बाल साहित्यकार है। आप बच्चों को गोस्वामी तुलसीदास जी का लिखा हनुमान चालीसा अर्थ सहित याद हो एवं आप उसे चित्रों के माध्यम से भी समझे इस हेतु संपूर्ण हनुमान चालीसे की बहुरंगी चित्रों और अर्थ सहित प्रस्तुति है यह।

प्रकाशक– संकेत गोस्वामी, एस–३, विनायक अपार्टमेंट, प्लाट नं.–९, किरण विहार, मांग्यावास रोड, मानसरोवर, जयपुर–३०२०२० (राजस्थान)

गाँव हमारा कितना सुंदर
मूल्य– १५०/–

समृद्धि श्रीवास्तव बाल साहित्य जगत में नई पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करने वाली साहित्यकार है। प्रस्तुत पुस्तक में आपकी २१ बाल कविताओं का आनंद लिया जा सकता है।

प्रकाशन– पूनम प्रकाशन, ४/२९१३ ग्राउण्ड फ्लोर, श्रीराम कॉलोनी, भोलानाथ नगर, दिल्ली–११००३२

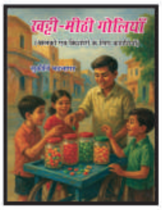

खट्टी मीठी गोलियाँ
मूल्य– २५०/–

सुख्यात बाल साहित्यकार सुकीर्ति भटनागर बच्चों व किशोरों के लिए विपुल साहित्य रचने वाली श्रेष्ठ रचनाकारों में गणनीय है। प्रस्तुत संकलन बारह ऐसी कहानियों का संकलन है जिसमें किशोर होती पीढ़ी के लिए मनोरंजन के साथ शिक्षा है, संदेश है, परामर्श है।

प्रकाशन–साहित्यागार, धामाणी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर–३०२००३ (राजस्थान)

SURYA
हर पल बढ़ती
ज़िंदगी के साथ
घर हो या ऑफिस, बड़े प्रोजेक्ट से लेकर सार्वजनिक जगहों तक, सूर्या के प्रोडक्ट्स आज हर किसी की ज़िंदगी का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। हमारे प्रोडक्ट्स की बड़ी रेंज व्यवसाय को बेहतर चलाने एवं शहरों के विकास में मुख्य रूप से अपनी भूमिका निभा रही है। व्यावहारिक, भरोसेमंद और विश्वसनीय, सूर्या बदलती दुनिया के साथ कदम मिलाकर चलने के लिए प्रतिबद्ध है।
PRAKASH
SURYA
SURYA HAI TOH BHAROSA HAI
Lighting | Wires and Cables | Professional Lighting | Fans | Appliances | Water Pumps | PVC and Water Tanks | Steel Pipes
I am SURYA
50 YEARS OF TRUST
DURABLE PRODUCTS
ASSURED QUALITY
SURYA ROSHNI LIMITED | consumercare@surya.in | www.surya.co.in
TOLL FREE
1800 102 5657

स्वाभिमान

– पुष्पेश कुमार 'पुष्प'

बात उस समय की है जब बालगंगाधर तिलक को छः वर्ष की कठोर कारावास की सजा हुई थी।

इस निर्णय के विरोध में प्रयागराज में सभा का आयोजन किया गया। इस सभा की अध्यक्षता पंडित बालकृष्ण भट्ट ने की। इस सभा में भट्टजी के सुपुत्र पंडित लक्ष्मीकांत भट्ट भी वक्ता थे। सभी वक्ताओं के बोलने के बाद लक्ष्मीकांत भट्ट अपने व्याख्यान देने को खड़े हुए।

उन्होंने बड़ी निर्भीकता से कहा– ''हमें तिलक के कारावास होने का उतना दुख नहीं है, जितना उन अधखिले फूलों का है, जो खिलने के पहले ही तोड़ लिए गए। नदी पार करने को कूदे ही थे कि निष्ठुर नाविक ने पत्थर बाँधकर जल में उन्हें डुबो दिया। वे खुदीराम बोस सरीखे बच्चे अब कहाँ मिलेंगे ? तिलक तो फिर आएँगे और जाएँगे।''

अँग्रेजों के राज्य में इतनी निर्भीकता मामूली बात नहीं थी। उनकी इस निर्भीकता से बोलने का फल उन्हें शीघ्र ही मिल गया। अगले ही दिन खुफिया पुलिस चील की तरह उनके मकान के इर्द–गिर्द मंडराने लगी।

सरकार कायस्थ पाठशाला के अधिकारियों को उपदेश दिया कि वे भट्ट जी को तत्काल सेवा से हटा दें। पाठशाला की ओर से भट्टजी को कहा गया कि उन्हें प्रोफेसर के पद से हटाकर हेड पंडित कर दिया गया है और वेतन भी पाँच रुपये कर दिये गये हैं। यह व्यवस्था कुछ समय तक लागू रहेगी, बाद में वे पुनः अपने पुराने स्थान पर नियुक्त कर दिए जाएँगे।

भट्टजी को यह बात अत्यंत अपमानजनक लगी। वे अपने स्वाभिमान की बात समझ प्रोफेसर के पद से त्याग पत्र देकर अपने घर चले आए और फिर कभी कायस्थ पाठशाला नहीं गए।

– बाढ़ (बिहार)

भूल भुलैया न से नल

– चाँद मोहम्मद घोसी

'जल ही जीवन है।' पानी की एक–एक बूँद बचाने की सीख जलदाय विभाग वाले देते रहते हैं। लेकिन नीचे खुले नल से बहुत देर से पानी व्यर्थ बह रहा है। समीर को यह अच्छा नहीं लग रहा है। समीर नल को बन्द करना चाहता है। लेकिन नल तक पहुँचने का रास्ता उसे पता नहीं है। आप सही मार्ग से समीर को नल तक पहुँचाने में सहायता कीजिए।

– मेढ़ता सिटी (राजस्थान)

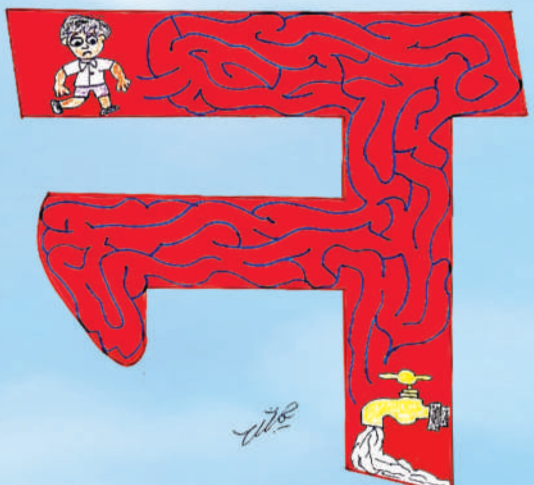

विज्ञान व्यंग

–संकेत गोस्वामी

गदहा हवलदार

– उमाशंकर 'मनमौजी'

हाथी थानेदार साहब से,
बोला गदहा हवलदार–
''दहशत में हैं लोग सड़क पर,
चलो उधर थानेदार।।
बम डिस्पोजल टीम ले चलो,
ले चलो पुलिस का डॉग।
बम–बम बम–बम चिल्लाते सब,
लोग रहे झटपट भाग।।''
थानेदार डाँटकर बोला–
''तू है गदहा हवलदार।
क्या इतना भी नहीं जानता,
आज सावन सोमवार?
शिवालय जा रहे काँवड़िया,
झुण्ड बनाकर तेज कदम।
जाप कर रहे शंकर जी का,
कहकर वे बम–बम बम–बम।।''

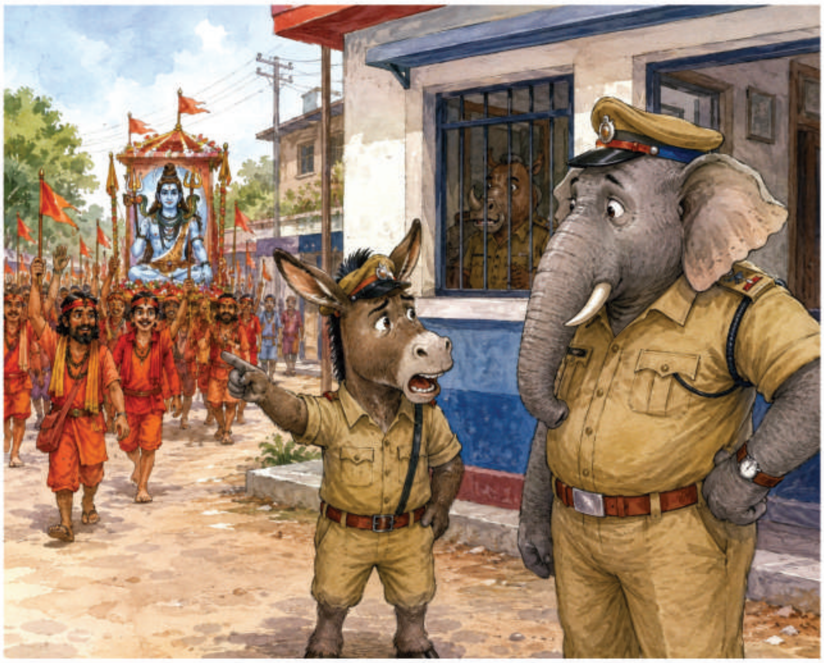

साहब की डाँट सुनकर गदहा, बोला वह रोता–रोता–
''सर! अगर जानता इतना तो, मैं गदहा फिर क्यों 'गधा' होता?''

– भोपाल
(मध्य प्रदेश)

कभी नहीं वे लड़ते

– विनय बंसल

रोज सबेरे आँगन, छत पे, चिड़ियाँ, तोते आते।
चूँ–चूँ, चीं–चीं, टें–टें, चें–चें, गीत खुशी के गाते।।

कोयल, बुलबुल, चिड़िया, तोते,
अपने सुर में गाते।
भाँति–भाँति की बोली सुनकर,
बच्चे नहीं अघाते।।
बड़े ध्यान से देखें बच्चे, जब ये चुगते दाना।
उड़ जाते सारे ही पक्षी, सुन बच्चों का गाना।।
सारे पक्षी पंख पसारे,
आसमान में उड़ते।
मिलजुलकर रहते आपस में,
कभी नहीं वे लड़ते।।

– आगरा (उ. प्र.)

बालगीत

रसगुल्ले से गाने तक

रसगुल्लों पर
बरफ़-सरीखी,
मिसरी कैसी चमक रही है!
इस मिसरी की
गेंद फेंककर,
एक 'वालरस' चहक रही है!

ये रसगुल्ले
मुँह में रखकर,
हर चींटी ने दौड़ लगाई!
घुसी एक
अखरोट छेदकर,
खेल रही हैं छुपन-छुपाई!

यह अखरोट
उछाल गिलहरी,
कहती – "इसको मैं खाऊँगी!"
चिड़िया कहती –
"तुम खाओ, मैं
तुम्हें देखकर कुछ गाऊँगी!"

रावेंद्रकुमार 'रवि'

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२४-२०२६ आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०७/२०२६ प्रेषण तिथि ३०/०७/२०२६ प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

देवपुत्र का सदस्यता शुल्क है।

एक अंक ३०/- वार्षिक सदस्यता ३००/- १० वर्षीय सदस्यता ५०००/-

एक ही पते पर १० या अधिक अंक एक साथ मँगवाने पर वार्षिक शुल्क १८०/- प्रति अंक

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल
'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइए

उत्तम कागज पर श्रेष्ठ मुद्रण एवं आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

स्वामी सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर, म. प्र. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश भावसार द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स, २०-२१, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इन्दौर, म. प्र. से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, नवलखा, इन्दौर, म. प्र. से प्रकाशित सम्पादक - गोपाल माहेश्वरी